ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

फाल्गुन-चैत्र संवत् नानकशाही ५५७-५८ मार्च 2026 वर्ष १९ अंक ७

स. बघेल सिंघ, जत्थेदार करोड़सिंघिआ मिसल

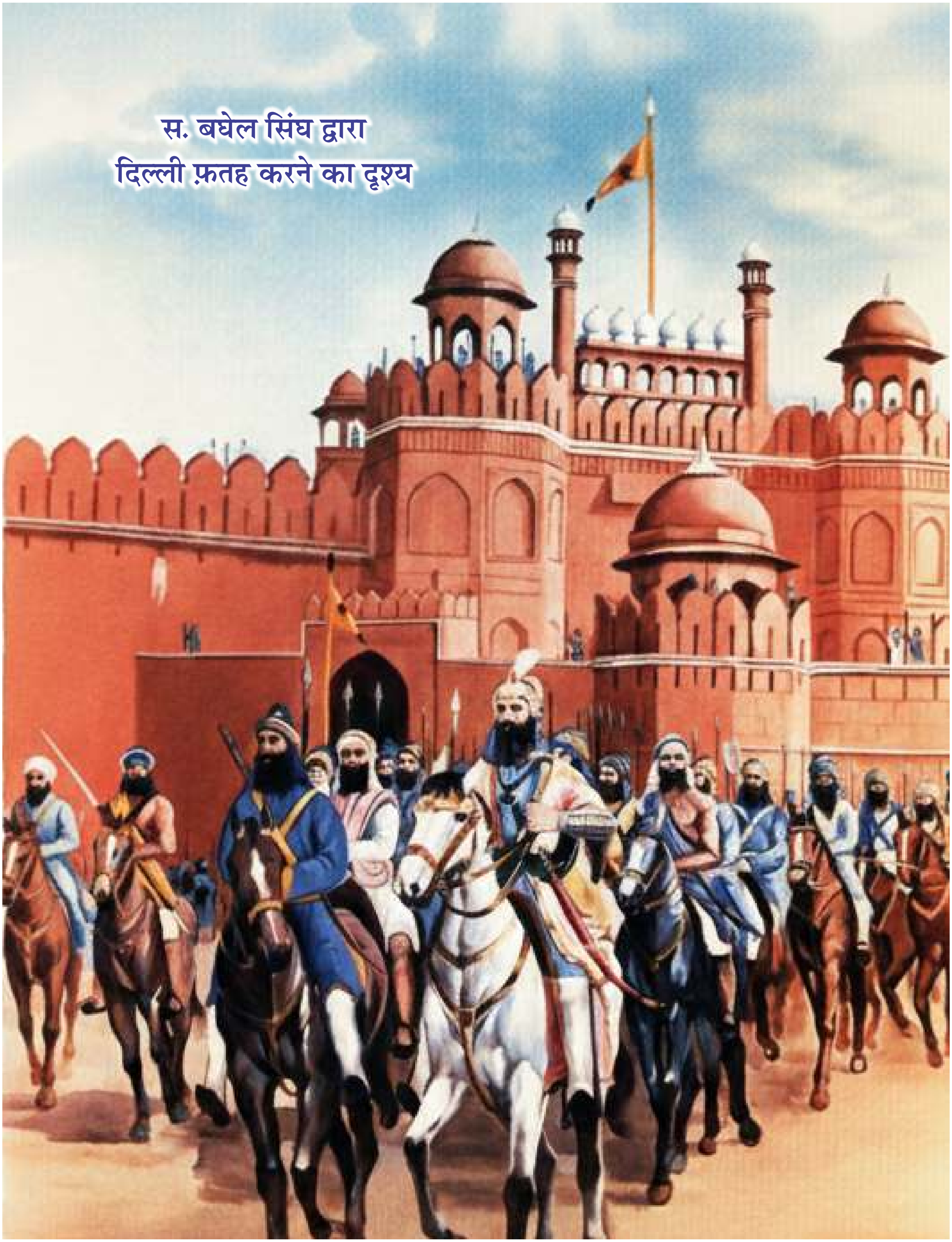
स. बघेल सिंघ द्वारा
दिल्ली फ़तह करने का दृश्य

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

फाल्गुन–चैत्र संवत् नानकशाही 557-558
वर्ष 19 अंक 7 मार्च 2026

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10	रुपये
आजीवन (देश)	100	रुपये
सालाना (विदेश)	250	रुपये
प्रति कापी	3	रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 6
बसंत पंचमी तथा गुरुद्वारा दूख निवारन साहिब पातशाही नौवीं 8
–प्रो. नव संगीत सिंघ
श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला 10
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
सरदार बघेल सिंघ 15
–स. जगजीत सिंघ
धर्म की मर्यादा के महान योद्धा : अकाली फूला सिंघ 19
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
सद्भावना, समानता और भाईचारे का आधार-स्तंभ है : गुरबाणी 25
–डॉ. कशमीर सिंघ नूर
उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ 28
–डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति
सिक्ख धर्मानुसार नारी-उत्थान 30
–स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन'
गुरमति अनुसार प्रेम : प्रकृति एवं प्रकार 33
–डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ 42
–डॉ. मनजीत कौर
ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

बारह माहा मांझ महला ५ घरु ४
ੴ सतिगुर प्रसादि॥
किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम॥
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम॥
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम॥
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम॥
स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम॥
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु॥
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम॥१॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३३)*

मांझ रागु में 'बारह माहा' बाणी का मंगलाचरण करते हुए श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि हे परमात्मा! हम अपने कर्मों की कमाई के अनुसार अर्थात् सुकर्मों को निभाने में कुछ कमी रह जाने के कारण आपसे बिछड़े हुए हैं। सनम्र विनती है कि आप अपनी कृपा कर हमें अपने साथ मिला लो। चारों दिशाओं में भटकने के उपरांत हम अंत में आपकी शरण में आए हैं। दूध देने से रहित गाय किसी काम नहीं आती। जल न मिले तो वृक्ष अथवा पौधा सूख जाता है। यदि असल मित्र-प्रभु का नाम ही न मिल पाया तो आराम कहां! जिस हृदय रूपी घर में प्रभु-पति प्रकट नहीं होते वह हृदय रूपी घर भट्ठी जैसा दुखदायक प्रतीत होता है। प्रभु मालिक के बिना मनुष्य रूपी स्त्री का सारा शृंगार व्यर्थ है अर्थात् बाहरी दिखावे के सभी प्रयास निष्फल हैं। मालिक के बिना बाहरी रूप से मित्र दिखने वाले सभी जन शत्रु हैं। ऐसी स्थिति में हृदय से एक ही विनती निकलती है कि हे नानक! कृपा कर अपना नाम प्रदान कर दो! हे मालिक ! मुझे अपने साथ मिला लेना, क्योंकि एक आप ही का नाम सदास्थिर है!

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥
जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३३)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज इस पावन पउड़ी में चैत्र मास की ऋतु और इससे संबंधित क्रियाओं के बारे में सांकेतिक वर्णन करते हुए मनुष्य-मात्र को मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस काल-खंड को प्रभु-नाम-सुमिरन द्वारा सफल करने का निर्मल उपदेश देते हुए गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि चैत्र मास में मालिक परमात्मा को स्मरण किया जाए तो बहुत ही गहरी प्रसन्नता मिलती है। यदि इस समय अच्छे मनुष्यों की संगत करते हुए जिह्वा से प्रभु-नाम जपा जाए तो मालिक स्वामी प्राप्त हो जाते हैं। जिसने ऐसा सुकर्म कर प्रभु को पा लिया है उसी मनुष्य का इस संसार में आना सफल गिना जाए, चूंकि मनुष्य जीवन का मूल प्रयोजन यही है— *"भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥"* गुरु पातशाह प्रत्येक क्षण प्रभु-नाम को समर्पित करने का दिशा-निर्देश बख्शिश करते हुए बाणी में फरमान करते हैं कि परमात्मा की पावन स्मृति के बगैर यदि जीया जाए तो सारा जीवन ही व्यर्थ हो जाता है। जो परमात्मा जल में, आकाश में, धरती पर व्याप्त हो रहा है, यदि ऐसा मालिक मनुष्य को याद ही न आए तो उसका कितना दुर्भाग्य होगा! दूसरी ओर, जिन्होंने परमात्मा को याद किया है वे बहुत ही भाग्यशाली अथवा महान हैं। हे नानक ! ऐसे सुजनों को देखकर मन परमात्मा के दीदार की कामना करता है, मन में उसके दीदार की प्यास बनी रहती है। चैत्र मास में जो मुझे परमात्मा से मिला दे मैं उसके चरण छू लूँ!

संपादकीय

श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला

हर पल अपने आप में नया है। जो प्रभु-नाम में मस्त है, जो इस शरीर को प्रभु-मिलन की बारी के रूप में लेता है, वह सारा जीवन हर्ष, चाव एवं उत्साह में सफल करता है। चिंता, उदासी एवं निराशा के दुष्प्रभाव से वह बचा रहता है और जीवन-यापन करता हुआ अपने जिम्मे लगा प्रत्येक आवश्यक कर्त्तव्य सही प्रकार से निभाता है। परंतु, ऐसे कर्म-व्यवहार के धारक लोगों की संख्या इस संसार में किसी युग में भी ज्यादा नहीं रही। वे 'विरले केई केइ' के महाकथन के अनुसार बहुत ही चुनिंदा होते हैं। दूसरी प्रकार के जनसाधारण की जिंदगी में विशेष रूप से नवीनता, ताजगी, रंग और रस का संचार करने के उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु हमारे बुद्धिमान अनुभवी पूर्वजों ने त्यौहारों का नियोजन किया। शायद हमारे देश भारतवर्ष के लोगों के जीवन में अधिक श्रम विद्यमान था, जिसके परिणामस्वरूप यहां अन्य देशों-कौमों की तुलना में त्यौहारों की अधिकता हमारे सामने दृष्टिगोचर होती है। हमारे अधिकतर त्यौहार जहां मौसम-परिवर्तन के सूचक हैं वहां इनकी सांस्कृतिक या सभ्याचारक, ऐतिहासिक और नैतिक पृष्ठभूमि भी है। होली तथा होला-महल्ला हमारे ऐसे ही त्यौहार हैं। होली देश में सदियों से मनायी जा रही है, जिसका संबंध फाल्गुन मास की सुहानी ऋतु से है, जब हमारे इस भूखंड में अत्यंत कटु शीत हमसे विदाई पा लेती है और हम सुख-आराम का अनुभव करते हैं। होली के साथ प्रभु के सच्चे भक्त प्रहलाद की प्रभु द्वारा उसके दुष्ट व मनमुख पिता के क्रोधवश होकर दिये प्राणदण्ड से रक्षा का प्रसंग जुड़ा हुआ है। बुराई की नौका भर कर ही डूबती है, इसका स्पष्ट प्रमाण हमें होली से जुड़े हृण्यकश्यप तथा उसकी बहिन होलिका के प्रभु-इच्छा द्वारा संहार को स्मरण करते हुए मिलता है। होलिका की कुटिलता की पराजय का लोगों ने नाच-कूद कर और धूल आदि उड़ाकर जश्न मनाया जो 'होली' कहलाया। सही सोच के धारकों ने इसमें एक-दूसरे पर रंग फेंकना शामिल किया तो होली का त्यौहार रंगों के त्यौहार के रूप में विकसित हुआ। मानव-वृत्ति में गलत दिशा में जल्दी जाने का जो रुझान है उसने एक-दूसरे पर रंग डालने के स्थान पर कई तरह की शरारतों की इसमें घुसपैठ करवा दी तथा अत्यंत नुकसानदेय केमिकलों वाले रंग प्रयोग होने लगे। धूल उड़ाना, कीचड़ उछालना, टोलियां बनाकर बाजारों में खड़े होकर राहगीरों को कई तरह से तंग-परेशान करना, होली का एक अभिन्न

अंग ही मान लिया गया।

जब साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने युग में लोगों को ऐसे अशोभनीय ढंग से होली मनाते हुए देखा-सुना तो अपने प्रिय सिक्ख पंथ अथवा खालसा पंथ को 'होला-महल्ला' के रूप में खालिस खालसायी त्यौहार प्रदान किया, जो जहां होली मनाने की उस युग की कई प्रकार की गलत रीतियों से पूर्णत: रहित, स्वच्छ एवं निर्मल है वहां इसका मनाने का प्रचलित किया गया ढंग भी खालसा के बाहरी और आंतरिक वीर-रस संचारित करने वाली सूरत व सीरत के अनुकूल है।

होला-महल्ला गुरु जी की अपनी देखरेख एवं उनके नेतृत्व में खालसा पंथ की जन्मभूमि श्री अनंदपुर साहिब की पावन धरती पर संवत् १७५७ बिक्रमी में मनाया जाना प्रारंभ हुआ। अपनी खालसा फौज को चुस्त-दुरुस्त व क्रियाशील रखने, प्रत्येक चुनौती भरी परिस्थिति से निपटने के लिए तैयार-बर-तैयार रहने को गुरु जी ने सिंघों को दो दलों में विभाजित किया। एक को किला होलगढ़ पर रक्षक रूप में तैनात कर दूसरे दल को किले पर धावा बोलने का हुक्म किया। दोनों दलों को पहचान-चिन्ह के रूप में अलग खालसायी रंगों की वर्दियां प्रदान की गईं। इतिहास में उल्लेख मिलता है कि आक्रमणकारी के रूप में निश्चित किया गया दल विजयी हुआ, जिसे गुरु जी ने सम्मानित किया। दोनों दलों के सिंघों को कड़ाह प्रसाद जी भर छकाया गया। यह ज्ञात हो कि इसमें तीर-कमान आदि शस्त्रों के प्रयोग पर गुरु जी की ओर से प्रतिबंध लागू किया गया था।

दशमेश पिता द्वारा बख्शिश किये गए खालसायी होला-महल्ला की परंपरा को गुरु के साजे-निवाजे खालसा पंथ ने श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर एक अमूल्य धरोहर के रूप में संभालने हेतु हर संभव यत्न किया है। प्रत्येक वर्ष सिक्ख संगत अत्यंत तीव्र उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करने लगती है कि कब होला-महल्ला का दिन आये और वो श्री अनंदपुर साहिब पहुंच कर साहिबे-कमाल गुरु जी के पावन दरबार में हाजरी भरे। तख़्त श्री केसगढ़ साहिब से आरंभ किया जाता नगर कीर्तन किला होलगढ़ पहुंच कर संपूर्ण होता है। बहुत भाग्यशाली है वो संगत जो इस नगर कीर्तन में शामिल होती है। हम सभी को भी होला-महल्ला के अवसर पर श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर पहुंचने की शुभ इच्छा मन में उत्पन्न करनी चाहिए। इस ऐतिहासिक एवं खालसायी उत्सव में जो संगत पहुंच पाने में सक्षम होगी, उसके जीवन में नयी उमंग, नयी तरंग, नया जोश एवं नया उत्साह संचारित होना सुनिश्चित है।

बसंत पंचमी तथा गुरुद्वारा दूख निवारन साहिब पातशाही नौवीं

*–प्रो. नव संगीत सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अरजन देव जी ने 'रामकली राग' में 'रुती' शीर्षकाधीन छ: ऋतुओं का वर्णन इस प्रकार किया है :—

१. सरस बसंत (बसंत) (चैत्र-बैसाख) :
रुति सरस बसंत माह चेतु वैसाख सुख मासु जीउ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२७)

२. ग्रीखम (ग्रीष्म, गर्मी) (ज्येष्ठ-आषाड़) :
ग्रीखम रुति अति गाखड़ी जेठ अखाड़ै घाम जीउ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२८)

३. बरसु (वर्षा) (सावन-भादों) :
रुति बरसु सुहेलीआ सावण भादवे आनंद जीउ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२८)

४. सरद (शरत्) (आश्विन-कार्तिक) :
रुति सरद अडंबरो असू कतके हरि पिआस जीउ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२८)

५. सिसीअर (सर्द) (मार्गशीर्ष-पौष) :
रुति सिसीअर सीतल हरि प्रगटे मंघर पोहि जीउ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२९)

६. हिमकर (पछेती ठंड) (माघ-फाल्गुन) :
हिमकर रुति मनि भावती माघु फगणु गुणवंत जीउ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२९)

'बसंत ऋतु' को 'ऋतु राज' अर्थात् 'ऋतुओं का राजा' कहा जाता है। इस ऋतु का समय श्री गुरु अरजन देव जी के मुताबिक चैत्र-बैसाख है। पुरातन मर्यादा के अनुसार पौष माह के आख़िरी दिन गुरुद्वारा साहिबान में 'बसंत राग' की शुरूआत हो जाती है, जो कि होला-महल्ला तक चलती है। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में 'अरदासिया सिंघ' 'माघी' से एक दिन पूर्व रात नौ बजे के करीब गुरु-चरणों में बसंत राग शुरू करने की अरदास करता है और फिर कीर्तनिए सिंघ शब्द का कीर्तन बसंत राग में गायन करते हैं। इस प्रकार प्रतिदिन कीर्तनिए सिंघ पहला शब्द 'बसंत राग' में से ही गायन करते हैं। प्रत्येक कीर्तनी जत्था 'बसंत की वार महलु ५' की पउड़ियों का गायन भी करता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुल ३१ राग हैं, जिनमें 'बसंत राग' भी शामिल है, जिसका ज़िक्र क्रम २५ पर आता है। यह राग श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना संख्या ११६८ से ११९६ तक शोभायमान है। बसंत ऋतु के सम्बंध में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज कुछ पंक्तियां दृष्टिगोचर हैं :

–माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६८)

–रुति आईले सरस बसंत माहि॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६८)

–माहा रुती महि सद बसंतु॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११७२)

–बनसपति मउली चड़िआ बसंतु॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११७६)

–मउली धरती मउलिआ अकासु॥
घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९३)

* १, लता ग्रीन एन्क्लेव, पटियाला—१४७००२, फोन : ९४१७६९२०१५

बसंत ऋतु में वातावरण प्राय: सुहावना होता है अर्थात् न ज्यादा ठंड, न ज्यादा गर्मी, इसीलिए कहा जाता है— *"आई बसंत, पाला उड़ंत।"* इस ऋतु की विशेषता है— मौसम में थोड़ी-सी गर्मी आना, फूलों का खिलना, पौधों का हरा-भरा होना और बर्फ़ का पिघलना। यह एक संतुलित मौसम है। इस मौसम में चारों तरफ़ हरियाली होती है। वृक्षों पर नये पत्ते आते हैं। सुहावना मौसम होने के कारण कई लोग बागों व दूरगामी स्थानों पर प्रकृति का आनंद लेने के लिए जाते हैं। भारत का त्योहार 'होली' बसंत ऋतु में ही मनाया जाता है।

भारतीय संगीत, गुरबाणी संगीत, साहित्य और कला के क्षेत्र में बसंत का महत्वपूर्ण स्थान है। संगीत में एक ख़ास राग, बसंत के नाम पर भी है, जिसे 'राग बसंत' कहते हैं। बसंत राग पर चित्र भी बनाए हुए मिलते हैं। इसके अलावा भारतीय कविता में बसंत पर काफ़ी कुछ लिखा मिलता है।

'गुरुद्वारा दूख निवारन साहिब पातशाही नौवीं, पटियाला' में बसंत पंचमी का अपना ही मुकाम है। वैसे तो यहाँ पर प्रत्येक माह की पंचमी को संगत बड़ी संख्या में पहुँचती है और नत्मस्तक होती है, मगर यहाँ पर बसंत पंचमी का सालाना जोड़-मेल अति श्रद्धा व सम्मान सहित विशेष रूप से मनाया जाता है। बसंत पंचमी वाले दिन संगत पिछली आधी रात से ही बड़ी संख्या में यहाँ पर पहुँच कर नत्मस्तक होती है। इस दौरान गुरुद्वारा साहिब में कवि दरबार, गुरमति समारोह, ढाडी दरबार तथा बसंत राग कीर्तन दरबार का आयोजन किया जाता है। गुरुद्वारा दूख निवारन साहिब में बसंत पंचमी की इसलिए भी महत्ता है, क्योंकि श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपने हुकमनामे (जो वर्तमान में गुरुद्वारा दूख निवारन साहिब में सुशोभित है) के माध्यम से यहाँ (जो उस समय लैहल नामक गाँव में था) बसंत पंचमी का त्योहार मनाए जाने का आदेश दिया था। इस हुकमनामे की मूल पांडुलिपि इस प्रकार है :—

"੧ੴ सतिगुर प्रसादि॥ हुकमनामा
੧ੴ अकाल जी सहाए

श्री गुरु तेग बहादर जी साहिब नूं भाग राम झिउर बेनती करत भइ जी लाहल गावें बिमारी जांदी नहीं सचे साहिब सफाबाद तों उठ के लाहल गावें दे पहाड़ ओर करीबण सत आठ सौ तौर बोहड़ दे तले आण बराजत भए, यीहां टोबड़ मे चरन धोबत भए, हुकम होइआ एथे जो कोई रोगी शरधा सहित अशनान करेगा उस दे सभे रोग खंडीएंगे। एथे थड़ा बणाउ, लंगर चलाउ। हुकम होइआ जो एथे बसंत पंचमी नूं अशनान करेगा, उस नूं सभ तीरथां दा फल परापत होएगा। संगत बेनती करत भई जी एथे अबादी हुंदी नहीं अबादी होवे जी। हुकम होइआ एथे रौणक बहुत होवेगी। एथे गुरसिख होसी राजधान, सेवा करसी गुरधाम, उगा होसी सभ जहान, जो कोई सेव कमावै मनबांछत फल पावै। करमां देवी खतराणी चरनी डिरी जी अठराए नाल बाल शांत हो जांदै है जी हुकम होइआ एथे अशनान कर सो दूर होसी, कोई रोग ना रहिसी, एथे दिन खोड़स माघ शुकल पंचमी सतारां सौ अठाईस सभ संगत को ख़ुशी करत भए। जो हुकम नामे दे दरशन पावेगा सो मेरे दरशन पावेगा गुरधाम को जावेगा सभ सुख पावेगा जम धाम ना जावेगा। समापतं॥"

इस प्रकार बसंत पंचमी पटियाला के 'गुरुद्वारा दूख निवारन साहिब पातशाही नौवीं' में अति श्रद्धा व गुरमति के अनुसार मनाई जाती है।

श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला

–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल*

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की क्रांतिकारी दृष्टि और खालसा पंथ का उद्भव भारत के इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है। दशमेश पिता का व्यक्तित्व केवल एक धर्मगुरु का नहीं, बल्कि एक महान क्रांतिकारी समाज-सुधारक, सेनानायक और मानवता के संरक्षक के रूप में प्रतिष्ठित है। उनका प्रसिद्ध उद्घोष *"चिड़िअन ते मैं बाज तुड़ाऊं॥ सवा लाख से एक लड़ाऊं॥ तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं॥"* केवल काव्यात्मक गर्जना नहीं, बल्कि एक वैचारिक क्रांति का घोष है। इसका अर्थ है कि साधारण, शोषित और निर्बल समझे जाने वाले मनुष्यों को इतना साहसी, आत्मविश्वासी और शक्तिशाली बना दिया जाए कि वे अन्याय, अत्याचार और दमन के विरुद्ध अडिग होकर खड़े हो सकें।

यह विचार सन् १६९९ ई. की बैसाखी के दिन साकार हो गया, जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना की। यह केवल एक धार्मिक संगठन नहीं था, बल्कि शोषित-पीड़ित मानवता को एक संगठित, नैतिक सैन्य-शक्ति में रूपांतरित करने की प्रक्रिया थी। खालसा पंथ का सृजन वस्तुतः सामाजिक क्रांति, आध्यात्मिक शुद्धता और सैन्य अनुशासन— इन तीनों का अद्भुत समन्वय था।

सिक्खों के सैन्यीकरण की नींव छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने ही रख दी थी, जब उन्होंने मीरी–पीरी की दो कृपाणें धारण कर आध्यात्मिक सत्ता (पीरी) और सांसारिक सत्ता (मीरी) के संतुलन का सिद्धांत प्रतिपादित किया था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्खों को यह सिखाया कि धर्म केवल तप, ध्यान और साधना तक सीमित नहीं है, बल्कि अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना भी धर्म का अनिवार्य अंग है। यह प्रक्रिया श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के काल में अपने उत्कर्ष पर पहुँची। यही वैचारिक आधार दशमेश पिता के काल में एक संगठित सैन्य चेतना के रूप में परिवर्तित हुआ।

श्री अनंदपुर साहिब : आध्यात्मिकता से सैन्य-शक्ति तक

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१

को केवल एक धार्मिक केंद्र नहीं, बल्कि सिक्खों के राजनीतिक और सैन्य-शक्ति के केंद्र के रूप में भी विकसित किया। यहाँ पर अनंदगढ़, केसगढ़, होलगढ़, लोहगढ़ तथा फतहगढ़ जैसे सुदृढ़ किलों का निर्माण कराया गया, जो केवल स्थापत्य संरचनाएँ नहीं थीं, बल्कि आत्मरक्षा, संगठन और सैन्य-प्रशिक्षण का केंद्र थे।

इन किलों के माध्यम से गुरु जी ने स्पष्ट संदेश दिया कि खालसा केवल आध्यात्मिक समुदाय नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध की शक्ति भी है। यह सैन्यीकरण आक्रामकता के लिए नहीं, बल्कि मानवता की रक्षा के लिए था।

वीर रसात्मक संस्कृति का निर्माण

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की दृष्टि में सैनिक शक्ति केवल हथियार उठाने तक सीमित नहीं थी। वे चाहते थे कि सिक्खों में वीर रसात्मक उल्लास, साहस, आत्मसम्मान, अनुशासन और सेवा-भाव स्थायी रूप से विकसित हो, इसलिए उन्होंने सिक्खों के व्यवस्थित सैनिक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया। घुड़सवारी, तलवारबाज़ी, भाला-प्रयोग, धनुर्विद्या, युद्ध-कौशल, सामूहिक युद्ध-रणनीति— ये सभी प्रशिक्षण केवल युद्ध-कौशल नहीं, बल्कि आत्मसंयम, धैर्य और नैतिक अनुशासन के साधन थे। खालसा केवल सैनिक नहीं, बल्कि धर्म-योद्धा भी था जो अन्याय के विरुद्ध युद्ध करता था, मगर निर्दोष के प्रति करुणा रखता था।

होला-महल्ला : उत्सव में युद्ध-संस्कृति

इसी विचारधारा का सांस्कृतिक रूप होला-महल्ला में दिखाई देता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब में होला-महल्ला की परंपरा की शुरूआत की। उस समय पंजाब में फाल्गुन पूर्णिमा को रंगों की होली खेलने की परंपरा थी, परंतु गुरु जी ने इसके अगले दिन वीर रसात्मक खेलों और सैन्य करतबों से युक्त उत्सव मनाने का निर्देश दिया।

होला-महल्ला केवल पर्व नहीं था, बल्कि एक सांस्कृतिक सैन्य-प्रशिक्षण था, जहाँ युद्ध-कौशल, अस्त्र-शस्त्र-प्रदर्शन, घुड़सवारी, सामूहिक युद्धाभ्यास, गतका और वीरता के प्रदर्शन होते थे। यह उत्सव सिक्खों में यह चेतना जागृत करता था कि शक्ति, शौर्य और संगठन केवल युद्ध के समय नहीं, बल्कि जीवन की स्थायी संस्कृति बनें।

खालसा : मात्र सैनिक नहीं, संरक्षक भी

खालसा पंथ का उद्देश्य सत्ता-प्राप्ति नहीं, बल्कि अन्याय का प्रतिरोध और मानवता की रक्षा था। दशमेश पिता का खालसा निर्भीक था, नैतिक था, अनुशासित था, करुणामय था और अन्याय के विरुद्ध अडिग था, इसीलिए खालसा केवल युद्ध करने वाली शक्ति नहीं, बल्कि समाज को नैतिक दिशा देने वाली शक्ति बन गया।

‘होला-महल्ला ‘ का अर्थ

‘होला-महल्ला’ शब्द-युग्म का एक विशेष अर्थ है। यहाँ ‘होला’ शब्द ‘होली’ का ‘खालसई बोलों’ में बोला जाने वाला रूप है। दूसरी ओर ‘महल्ला’ शब्द अरबी भाषा के ‘जाप-हल्ला’ शब्द का क्षेत्रीय तद्भव रूप है। ‘हल्ला’ यानी ‘आक्रमण’ और ‘जाप-हल्ला’ का अर्थ हुआ— आक्रमण का स्थान । अत: ‘होला-महल्ला’ का अर्थ हुआ— होली के अवसर पर आक्रमण आदि युद्ध कौशलों का अभ्यास ।

प्रथम होला-महल्ला

प्रथम होला-महल्ला श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने चैत्र प्रतिपक्ष १७५७ विक्रमी अर्थात् सन् १७०० ईसवी में श्री अनंदपुर साहिब के किला होलगढ़ में मनाया।

यहाँ सम्पूर्ण खालसा सेना के दो भाग किये गये और उनमें युद्ध का अभ्यास कराया गया। इसके पश्चात् दीवान सजे, गुरबाणी का पाठ किया गया और अंत में कड़ाह-प्रसाद तथा गुरु का लंगर वितरित किया गया। दीवान की समाप्ति पर विजेता दल को ‘सिरोपा’ बख्शिश कर सम्मानित किया गया।

इस प्रकार दशमेश पिता ने होला-महल्ला पर्व के माध्यम से सिक्खों में वीर रसात्मक उल्लास और मानवता की रक्षा की प्रेरणा भरने का पुख्ता प्रबंध कर दिया।

इसके बाद होला-महल्ला मनाने की जो परंपरा आरंभ हुई, वह आज तक अटूट रूप से चल रही है।

श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला

तीन सौ वर्षों से भी अधिक समय बीत चुका है, परंतु खालसा पंथ की शौर्य–परंपरा आज भी उतनी ही जीवंत, उतनी ही तेजस्वी और उतनी ही प्रेरक है। इसी जीवंत परंपरा का प्रतीक है— होला-महल्ला— एक ऐसा पर्व, जो केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि खालसा के सैन्य, नैतिक और आध्यात्मिक स्वरूप का भव्य उत्सव है। होली के अगले दिन अर्थात् चैत्र प्रतिपदा को, यह पर्व ऐतिहासिक नगरी श्री अनंदपुर साहिब में अत्यंत श्रद्धा, उत्साह और अनुशासन के साथ मनाया जाता है।

होला-महल्ला के अवसर पर श्री अनंदपुर साहिब मानों एक जीवंत इतिहास में परिवर्तित हो जाता है। देश-विदेश के कोने-कोने से श्रद्धालु, संगत और खालसा पंथ के अनुयायी गुरु की इस पावन नगरी में एकत्र होते हैं। सड़कों, गलियों तथा खुले मैदानों में खालसा की परंपरागत वेशभूषा, केसरिया रंग, नीले बाणे और झिलमिलाते अस्त्र-शस्त्र वातावरण को एक अद्भुत गरिमा प्रदान करते हैं। यह एक ऐसा दृश्य होता है जहाँ अतीत और वर्तमान एक-दूसरे में घुलते हुए प्रतीत होते हैं।

इस पर्व का सबसे प्रमुख और आकर्षक आयोजन है भव्य नगर कीर्तन, जिसे परंपरागत

रूप से 'महल्ला चढ़ना' कहा जाता है। इस नगर कीर्तन का आरंभ किला अनंदगढ़ साहिब से होता है, जो स्वयं खालसा के सैन्य गौरव और ऐतिहासिक संघर्षों का साक्षी रहा है। प्रात:काल यहाँ 'पाँच प्यारे' एकत्र होकर सामूहिक रूप से अरदास करते हैं। यह अरदास केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि खालसा की एकता, अनुशासन और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक होती है।

अरदास के पश्चात् निशान साहिब को सम्मानपूर्वक उठाया जाता है। यह क्षण अत्यंत भावपूर्ण होता है, जब गुरु की छत्रछाया में खालसा संगत किले से बाहर निकलती है— इसे ही 'महल्ला चढ़ना' कहा जाता है। इस महल्ले में सबसे आगे निशान साहिब लिए निशानची होते हैं। उनके पीछे खालसा की परंपरागत सैन्य टुकड़ियाँ चलती हैं। विशेष रूप से आकर्षण का केंद्र होते हैं निहंग सिंघों के जत्थे, जिन्हें प्रेम से 'गुरु की लाडली फौज' कहा जाता है। नीले बाणे (पोशाक) धारण किए, दमकते अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित, घोड़ों पर सवार निहंग सिंघ खालसा की अजेय भावना का सजीव रूप प्रस्तुत करते हैं।

नगर कीर्तन के दौरान नगाड़ों की गूंज वातावरण को वीर रस से भर देती है। नगाड़े की प्रत्येक चोट मानों इतिहास के पन्नों को जीवित कर देती है। उसी लय पर संगत के कंठ से उठते हैं गगनभेदी जयकारे— "बोले सो निहाल! सत श्री अकाल!" ये जयघोष केवल नारे नहीं, बल्कि खालसा की सामूहिक चेतना, विश्वास और साहस की उद्घोषणा होते हैं।

किला अनंदगढ़ से चला यह नगर कीर्तन किला होलगढ़ होते हुए आगे बढ़ता है। मार्ग में श्रद्धालु पुष्प-वर्षा करते हैं, संगत माथा टेकती है और वातावरण श्रद्धा से परिपूर्ण हो उठता है। इसके पश्चात् नगर कीर्तन चरण गंगा को पार करता है। चरण गंगा को पार करना प्रतीकात्मक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह मानों सांसारिक सीमाओं से निकलकर गुरु की मर्यादा में प्रवेश करने का संकेत है।

चरण गंगा पार करते ही नगर कीर्तन खुले मैदान में जा पहुँचता है, जहाँ होला-महल्ला का सबसे रोमांचक और दर्शनीय पक्ष सामने आता है। यहाँ खालसा सेना द्वारा युद्ध-कौशल के अद्भुत प्रदर्शन किए जाते हैं। घुड़सवारी, तेग चलाना, भाला-प्रयोग, गतका और सामूहिक युद्धाभ्यास— ये सभी करतब केवल शारीरिक कौशल नहीं, बल्कि अनुशासन, साहस और आत्म-नियंत्रण के आदर्श उदाहरण होते हैं। इन प्रदर्शनों के माध्यम से यह संदेश स्पष्ट होता है कि खालसा संत भी है और सिपाही भी।

दोपहर के पश्चात् नगर कीर्तन पुन: अपनी यात्रा आरंभ करता है और इस बार इसका गंतव्य होता है तख़्त श्री केसगढ़ साहिब— खालसा पंथ की

सृजना का पावन स्थल। जैसे-जैसे नगर कीर्तन तख़्त साहिब की ओर बढ़ती है, वातावरण में एक विशेष गंभीरता और आध्यात्मिकता का संचार हो जाता है। तख़्त श्री केसगढ़ साहिब पहुँचकर नगर कीर्तन का विधिवत समापन होता है।

इसके पश्चात् तख़्त श्री केसगढ़ साहिब में भव्य दीवान सजाए जाते हैं। यहाँ पवित्र गुरबाणी का कीर्तन होता है, जो संगत के मन को शांति और श्रद्धा से भर देता है। रागी जत्थों द्वारा किया जाता गुरबाणी-कीर्तन, खालसा के जीवन-दर्शन, त्याग, सेवा की भावना को पुनः जाग्रत करता है। दीवान की समाप्ति पर सामूहिक अरदास की जाती है, जिसमें खालसा पंथ की चढ़दी कला, विश्व-कल्याण और मानवता की भलाई की कामना की जाती है।

इस प्रकार होला-महल्ला केवल एक पर्व नहीं, बल्कि खालसा पंथ की आत्मा का उत्सव है। यह पर्व स्मरण कराता है कि खालसा की परंपरा केवल इतिहास की वस्तु नहीं, बल्कि आज भी उतनी ही सजीव, प्रेरक और प्रासंगिक है। श्री अनंदपुर साहिब में मनाया जाने वाला होला-महल्ला श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की उस अमर दृष्टि का जीवंत प्रमाण है, जिसमें उन्होंने शोषित मानवता को आत्मसम्मान, साहस और संगठित शक्ति का मार्ग दिखाया।

निष्कर्ष

इस प्रकार श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला युद्ध की वीरतापूर्ण शौर्य-कलाओं के अभ्यास का पावन पर्व है। यह सिक्खों को शस्त्र-संचालन में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है ताकि प्रतिबद्ध होकर शोषित-पीड़ित मानवता, देश और धर्म की रक्षा कर सके।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन और दर्शन हमें यह सिखाता है कि धर्म का वास्तविक अर्थ केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष, शोषित की रक्षा और मानव गरिमा की स्थापना है। खालसा पंथ की स्थापना, सिक्खों का सैन्यीकरण, किलों का निर्माण, सैनिक प्रशिक्षण और होला-महल्ला जैसी परंपराएँ— ये सभी एक ही वैचारिक सूत्र से जुड़ी हैं— मानवता की रक्षा के लिए शक्ति आवश्यक है और शक्ति का नैतिक नियंत्रण आवश्यक है।

दशमेश पिता ने साधारण मनुष्यों को असाधारण साहस से भर दिया। यही उनके उद्घोष की सच्ची व्याख्या है। चिड़ियाँ बाज से नहीं लड़ सकती, मगर जब आत्मा निर्भीक हो जाती है, तब चिड़ियां बाज़ को मार गिराती हैं और इतिहास की दिशा बदल जाती है।

सरदार बघेल सिंघ

*–स. जगजीत सिंघ**

अक्सर ही सिक्खों के विजय-अभियान की जब बात की जाती है तब सरदार बघेल सिंघ द्वारा दिल्ली फतह करने का जिक्र अवश्य आता है। दिल्ली पर फतह प्राप्त कर लाल किले पर खालसाई झंडा फहराने वाले नायक सरदार बघेल सिंघ का जन्म १७३० ई. के दशक में पंजाब के जिला तरनतारन के झबाल कलां गांव में हुआ था। वे चौधरी भाई लंगाह के वंशज थे, जो माझा क्षेत्र में ८४ गांवों के सिक्ख मुखिया थे और जिन्होंने अपने छोटे भ्राता भाई पैरो शाह (माता भागो जी के दादा) सहित श्री गुरु अरजन देव जी के समय में सिक्ख धर्म अपना लिया था।

सरदार बघेल सिंघ का अधिकार-क्षेत्र सतलुज और यमुना नदियों के मध्य था। वे सरदार करोड़ा सिंघ के नेतृत्व वाली करोड़ासिंघिया मिसल के साथ जुड़ गए। सरदार करोड़ा सिंघ के निधन के बाद १७६५ ई. में सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिया मिसल के प्रमुख बने।

कहते हैं कि करोड़ासिंघिया मिसल में १२ हजार सैनिक थे। सरदार बघेल सिंघ कुशल सैनिक होने के साथ-साथ एक बेहतरीन राजनीतिक वार्ताकार भी थे। अपनी इसी नीति के अंतर्गत उन्होंने कई शत्रुओं को अपने पक्ष में कर लिया था। वे सभी वर्ग के लोगों को एक साथ लेकर चलने में पारंगत थे। इसी के तहत मुगलों, रुहेलों, मराठों आदि ने उनसे मित्रता की भावना प्रकट की। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अहमद शाह दुर्रानी के लगातार आक्रमणों के कारण सिक्खों ने अपनी शक्ति को संगठित करना शुरू कर दिया।

जब मालेरकोटला के निकट कुप्प रुहीड़ा नामक स्थान पर अहमद शाह दुर्रानी ने सिक्खों के बड़े समूह पर हमला किया तो उस समय सरदार बघेल सिंघ ने अन्य सिक्ख सेनापतियों के साथ मिलकर अहमद शाह दुर्रानी का मुकाबला किया था। इस एक ही दिन के हमले में ३०-४० हजार महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग सिक्ख शहीद हो गए थे। सिक्ख सेनापति गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

शुकरचक्किया मिसल ने गुजरांवाला तथा

** सहायक संपादक।*

रावी एवं चनाब-दोआब के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। रामगढ़िया मिसल ने श्री अमृतसर साहिब, गुरदासपुर, लाहौर के आसपास के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की । करोड़ासिंघिया मिसल ने उन क्षेत्रों पर अपना अधिकार घोषित किया जिनमें अब अंबाला, करनाल, हिसार, रोहतक, चंडीगढ़ आदि शामिल हैं। सरदार बघेल सिंघ ने जलंधर दोआब के कुछ हिस्सों पर कब्जा कर लिया और होशियारपुर के पास हरिआना में अपना केंद्र स्थापित किया। सिक्खों द्वारा सरहिंद पर विजय प्राप्त करने के तुरंत बाद, उन्होंने आगे बढ़ना शुरू किया। फिर सरदार बघेल सिंघ ने यमुना नदी के पार के क्षेत्रों की ओर ध्यान दिया। उनके नेतृत्व में जल्द ही सिक्खों ने दिल्ली और उससे आगे के क्षेत्रों पर आक्रमण करना शुरू कर दिया, जिनमें मेरठ, रुहेलखंड तथा अवध भी शामिल थे। सिक्खों ने दिल्ली के आसपास के गांवों पर कब्जा कर लिया।

फरवरी, १७६४ ई. में सरदार बघेल सिंघ तथा अन्य प्रमुख योद्धाओं के नेतृत्व में ४० हजार सिक्खों के एक दल ने सहारनपुर पर कब्जा कर देवबंद, ननौता, लखनौती, गंगोह, गौसगढ़ आदि क्षेत्रों पर अधिकार जमा लिया। इस क्षेत्र पर उस समय नजीब-उद-दौला के पुत्र और उत्तराधिकारी जाब्ता खान का शासन था। बेबस एवं भयभीत जाब्ता खान ने सरदार बघेल सिंघ के समक्ष घुटने टेक दिए और एक बड़ी रकम देने की पेशकश की तथा गठबंधन कर लिया। इसके बाद सरदार बघेल सिंघ ने जलालाबाद पर विजय प्राप्त की। मार्च १७७६ ई. में सरदार बघेल सिंघ ने मुजफ्फरनगर के पास शाही सेना को पराजित किया। अब पूरा यमुना-गंगा दोआब क्षेत्र उनके अधिकार में था।

सन् १७७८ में मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय ने सिक्खों को पराजित करने के लिए लगभग एक लाख सैनिकों की सेना भेजी। नवाब माजिद-उद-दौला वज़ीर थे और सेना का नेतृत्व कर रहे थे। सरदार बघेल सिंघ ने पटियाला के निकट घनौर के युद्ध में शक्तिशाली मुगल सेना को पराजित कर दिया। परिणामस्वरूप, विशाल मुगल सेना ने सरदार बघेल सिंघ की सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

सन् १७७९ की शरद ऋतु में फरखंदा बख्त और वज़ीर अब्दुल अहद खान के नेतृत्व में एक विशाल मुगल सेना ने सतलुज नदी के पार स्थित सिक्खों के विरुद्ध अभियान चलाया। दूसरी तरफ सरदार बघेल सिंघ, सरदार राय सिंघ और सरदार तारा सिंघ घेबा ने पटियाला को घेर लिया। राजा अमर सिंह ने लहाल गांव में सरदार बघेल सिंघ के शिविर में जाकर उनसे

सुलह कर ली। इसी दौरान सरदार बघेल सिंघ द्वारा राजा अमर सिंह के पुत्र साहिब सिंह को खालसा पंथ में दीक्षित किया गया। फिर अपने नए सिक्ख सहयोगियों को साथ लेकर सरदार बघेल सिंघ ने शाही सेना पर धावा बोलने का निश्चय किया। फरखंदा बख्त और वज़ीर अब्दुल अहद खान ने तब संयुक्त सिक्ख सेना का मुकाबला करने की बजाय भाग जाना अधिक सुरक्षित समझा और पीछे हटते समय उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ा।

सरदार बघेल सिंघ ने रुहेलखंड क्षेत्र में पीलीभीत के अलावा अलीगढ़, खुर्जा, चंदौसी, इटावा तक अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

अप्रैल १७८१ ई. में सरदार बघेल सिंघ ने शाहबाद के खलील बेग खान पर हमला किया। बेग खान ने अपने ३०० घुड़सवार, ८०० पैदल सैनिकों और २ तोपों सहित आत्मसमर्पण कर दिया।

सरदार बघेल सिंघ अपनी सेना के साथ दिल्ली के आसपास के जंगलों में डेरा डाले हुए थे और गुप्त रूप से हमला करने की योजना बना रहे थे। जल्द ही उनकी मौजूदगी का पता चल गया और मुगल सम्राट शाह आलम (द्वितीय) को सूचना मिली कि तीस हजार सिक्ख सैनिक जंगलों में डेरा डाले हुए हैं। उन्होंने बातचीत के माध्यम से मामला सुलझाने को प्राथमिकता दी। जिस स्थान पर उन्होंने डेरा डाला था, वह स्थान बाद में 'तीस हजारी' नाम से जाना जाने लगा।

जब मुगल सम्राट को पता चला कि सिक्ख दिल्ली पर हमला करने की योजना बना रहे हैं, तो उसने किले के सभी द्वार बंद करने का आदेश दिया। उसने निकटवर्ती गाँवों में खाद्य-सामग्री की आपूर्ति पर रोक लगवा दी ताकि जंगलों में डेरा डाले सिक्खों तक राशन न पहुंचने पाए और वे वापस लौट जाएं। कुछ सिक्खों की मुलाकात संयोगवश पास के गांव के एक राजमिस्त्री से हुई, जिसने उन्हें बताया कि किले की एक दीवार अंदर से ढह गई है, हालांकि बाहरी हिस्सा अभी सुरक्षित है। वह सिक्खों को वो स्थान दिखाने के लिए ले गया। सिक्खों ने दीवार में लकड़ी ठोककर मोरी बना ली (सेंध लगा ली), जिससे वे किले में प्रवेश कर पाए। इस स्थान को अब 'मोरी द्वार' कहा जाता है।

११ मार्च, १७८३ ई. को सिक्खों ने दिल्ली के लाल किले में प्रवेश किया और दीवान-ए-आम पर कब्ज़ा कर वहां पर खालसाई झंडा झुला दिया। घबराए हुए मुगल सम्राट शाह आलम (द्वितीय) ने उनके साथ एक समझौता किया, जिसके तहत सरदार बघेल सिंघ को सिक्खों के ऐतिहासिक स्थलों पर गुरुद्वारा साहिबान निर्मित किए जाने की अनुमति दी गई और तब

तक के लिए शहर के दीवानी हक सरदार बघेल सिंघ को सौंप दिए गए। सर्वप्रथम उन्होंने सिक्ख गुरुओं के जीवन से जुड़े स्थलों का पता लगाया। उस स्थान को चिह्नित किया गया जहां औरंगजेब के आदेश पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद किया गया था। वहां पर गुरुद्वारा सीसगंज साहिब का निर्माण-कार्य आरंभ करवाया गया। जहां पर गुरु जी के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार किया गया था वहां पर गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब के निर्माण का शुभारंभ किया गया। इसी प्रकार गुरुद्वारा बंगला साहिब, गुरुद्वारा बाला साहिब, गुरुद्वारा साहिब मोती बाग, गुरुद्वारा साहिब मजनूं का टिल्ला आदि का निर्माण किया गया। मुग़ल सम्राट से सहायता एवं नज़राने में मिली सारी रकम आदि से सरदार बघेल सिंघ ने सभी गुरुधामों को शोभित किया।

भाई बघेल सिंघ ने कानून-व्यवस्था को सुचारू रूप से बनाए रखा। उनके घोड़े दिन-रात शहर की सड़कों पर गश्त लगाते थे। नागरिकों ने दशकों बाद ऐसी शांति और व्यवस्था देखी थी। समझौते के अनुसार, सात गुरुद्वारों का निर्माण लगभग सात महीनों मंल पूरा हो गया और वे दिसंबर १७८३ के शुरूआत में दिल्ली से विदा हो गए। उस समय शहर में उनके पास पर्याप्त सामर्थ्य था और उन्हें जनता का भरपूर सम्मान व सद्भाव प्राप्त था। वे चाहते तो शहर पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए वहीं रुक सकते थे, मगर उन्होंने समझौते का पालन किया और निर्धारित अवधि समाप्त होने पर दिल्ली छोड़ दिया। इससे पूर्व वे मुग़ल सम्राट के निमंत्रण पर पूरी शानौ-शौकत के साथ हाथी पर सवार होकर विजेता के रूप में उससे मिलने गए। मुग़ल सम्राट ने फिर से नज़राने आदि भेंटकर सरदार बघेल सिंघ का सम्मान किया।

इसके बाद भी सरदार बघेल सिंघ ने लंबा समय लगभग बीस वर्ष तक सिक्ख पंथ की बागडोर संभाले रखी और जब भी कभी पंथ पर कोई संकट मंडराता तो तुरंत उसका हल कर देते।

सरदार बघेल सिंघ का व्यक्तित्व ऐसा था कि उनकी आमद की ख़बर पाकर बड़े से बड़े शासक के पैरों तले से जमीन खिसक जाती थी। सरदार बघेल सिंघ की बहुत कम संख्या वाली निडर फौज के सामने विरोधियों को अपनी विशाल सेना भीरू लगने लगती थी।

सरदार बघेल सिंघ का निधन १८०२ ई. में वर्तमान होशियारपुर जिले के हरिआना नामक स्थान पर हुआ था।

धर्म की मर्यादा के महान योद्धा : अकाली फूला सिंघ

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

गुरबाणी में वीरता की विस्तृत व्याख्या की गई है। वीरता का मूल आधार परमात्मा की भक्ति को माना गया है। जिसके ऊपर परमात्मा-प्रेम का रंग चढ़ गया उसे वीर योद्धा माना गया है। परमात्मा-प्रेम को धारण करना अपने अंतर के स्व को पराजित कर, माया के जाल को तोड़ और विकारों को वश में करने के बाद ही सम्भव हो पाता है। यह अपने आप से एक बड़ा युद्ध है जिसमें विजयी होना प्रत्येक के लिये सरल नहीं होता है। गुरसिक्ख इसे गुरु की कृपा से, गुरु-शबद से जुड़ कर, स्वयं को पूर्ण समर्पित करने के बाद ही जीत पाता है। यह युद्ध जीतने के बाद जब वह निर्भय परमात्मा की शरण लेता है तो उसके भय में रह कर शेष सभी स्थितियों से भयमुक्त हो जाता है। आध्यात्मिक, धार्मिक जगत हो, समाज अथवा राज्य हो, युद्ध का मैदान ही हो, वह निर्भय होकर शुभ कार्यों के लिए जूझता और विजयी होता है। उसके लिये गुरु को दिया वचन और गुरु के आगे अरदास करके लिया गया संकल्प अपने प्राणों से भी प्रिय होता है। इससे वह कभी पीछे नहीं हटता। खालसा का सृजन करने के बाद श्री अनंदपुर साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने घोषणा की थी कि उन्होंने खालसा के रूप में संत-सिपाही तैयार किये हैं। ऐसे धर्म-योद्धाओं की लम्बी श्रृंखला में अकाली फूला सिंघ का नाम प्रथम श्रेणी में आता है जिनका जीवन सदैव के लिये सिक्ख इतिहास में आदर और प्रेरणा का स्रोत बन गया। धार्मिक मूल्यों और मर्यादा के लिए तन-मन से समर्पित अकाली फूला सिंघ का व्यक्तित्व ऐसा था कि अंग्रेज, पठान और महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य के डोगरे उनके नाम से थर-थर कांपते थे। उनका प्रभामंडल ऐसा दिव्य था कि हजारों सिक्ख उनके एक संकेत पर अपनी जान तक न्यौछावर करने को तैयार रहते थे। उन्हें न पद का मोह था, न सत्ता की लालसा। तभी वे श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार के रूप में खालसा राज्य के शक्तिशाली सम्राट महाराजा रणजीत सिंघ को दो बार सजा देने का इतिहास रच सके और समाज को यह स्पष्ट संदेश दिया कि धर्म की मर्यादा के ऊपर न कोई संस्था है, न कोई व्यक्ति।

अकाली फूला सिंघ के जन्म से पूर्व औरंगजेब की मृत्यु हो चुकी थी, मुगल राज निर्बल हो चुका था। भारत में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों का प्रवेश हो चुका था। सिक्खों ने संगठित होकर बारह मिसलें बना ली थीं। इनमें से

*ई– १७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ—२२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९

एक मिसल थी— निशान (निशानां) वाली। अकाली फूला सिंघ के पिता सरदार ईशर सिंघ इस मिसल के सदस्य थे और भक्तिभाव वाले सदाचारी सिक्ख थे। वे बांगर के शीहां नामक गाँव में रहते थे, जहां अकाली फूला सिंघ का जन्म सन् १७६१ में हुआ। अकाली फूला सिंघ ने अभी दूसरे वर्ष में प्रवेश ही किया था कि सन् १७६२ में पिता सरदार ईशर सिंघ अहमद शाह अब्दाली के साथ सिक्खों के हुए एक भीषण युद्ध में गंभीर रूप से घायल हो गये। इस युद्ध में तीस हजार से अधिक सिक्ख शहीद हुए थे। इस युद्ध को 'बड़ा घल्लूघारा' के नाम से जाना जाता है। घायल हुए सरदार ईशर सिंघ ने एक प्रमुख सिक्ख बाबा नैणा सिंघ को घर बुलाकर आगे की परवरिश के लिए बालक अकाली फूला सिंघ को उन्हें सौंप दिया। बाद में वे संसार से विदा हो गये। कुछ समय बाद ही अकाली फूला सिंघ की माता का भी देहांत हो गया। बाबा नैणा सिंघ के संरक्षण तथा गुरसिक्खों की संगत का पूरा प्रभाव अकाली फूला सिंघ पर पड़ा। वे बाल्यावस्था में ही सिक्ख-सिद्धांतों और गुरबाणी के साथ पूरी तरह से जुड़ गये। कहते हैं कि दस वर्ष की आयु में ही उन्हें जपु जी साहिब, जापु साहिब, सोदरु बाणियों के अलावा अकाल उसतत, सवैये आदि बाणी भी कंठस्थ हो गई थी। शीघ्र ही उन्होंने अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी प्रवीणता प्राप्त कर ली। उन्होंने पंजाबी भाषा के साथ ही फ़ारसी भाषा, युद्ध-विद्या, राजनीति और राज-प्रबंध की भी शिक्षा प्राप्त की। जब अकाली फूला सिंघ महाराजा रणजीत सिंघ के सम्पर्क में आये थे तो उनकी फ़ौज में भर्ती अंग्रेज सेनापतियों के साथ बातचीत करने के लिए उन्होंने अंग्रेजी का भी कार्यकारी ज्ञान प्राप्त कर लिया था जो उनमें सीखने और पूर्णता प्राप्त करने की उत्कंठा को प्रकट करता है। इस जिज्ञासा और उत्कंठा ने ही उन्हें महान बनाया। वे एक प्रखर युवा सिक्ख के रूप में विकसित हो रहे थे।

उधर बाबा नैणा सिंघ वृद्ध हो चुके थे। अपने अंतिम समय में उन्होंने अपने जत्थे का प्रमुख अकाली फूला सिंघ को बना दिया। बाबा नैणा सिंघ के निधन के बाद अकाली फूला सिंघ ने अपने कुशल नेतृत्व से सभी को शीघ्र ही प्रभावित कर लिया और उनकी प्रसिद्धि चारों ओर फैलने लगी। उस समय तक अहमद शाह अब्दाली और उसके पुत्र तैमूर शाह की मृत्यु हो चुकी थी। अब्दाली के पौत्र शाह जमान ने पंजाब पर पुनः आक्रमण करने आरम्भ कर दिये। सन् १७९७ में उसने लाहौर पर कब्जा कर लिया और अपनी फ़ौज की एक टुकड़ी श्री अमृतसर साहिब श्री दरबार साहिब पर कब्जा करने के उद्देश्य से भेजी। इस समय अकाली फूला सिंघ अपने बारह सौ घुड़सवार सिक्खों के जत्थे सहित नगर में ही मौजूद थे। जैसे ही उन्हें अफगानों के आने की सूचना मिली वे जत्थे सहित श्री दरबार साहिब गये, अरदास की और जोश से भरे जैकारे बोलते हुए अफगानियों को वहां पहुंचने से पहले ही रोक

लिया। भीषण युद्ध हुआ और अफगानी फ़ौज को भारी क्षति उठानी पड़ी। अफगानी फ़ौज वापिस लाहौर की ओर भाग गई। यह अकाली फूला सिंघ की शहीद मिसल के जत्थेदार के रूप में पहली विजय थी। इससे उनकी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा स्थापित हुई।

यही वो समय था जब महाराजा रणजीत सिंघ, जो उस समय शुकरचक्किआ मिसल के जत्थेदार थे, अपने राज्य का विस्तार करने में लगे हुए थे। सन् १८०१ में महाराजा रणजीत सिंघ ने श्री अमृतसर साहिब को अपने राज्य में मिलाने के लिये आक्रमण की तैयारी कर ली और वहां फ़ौज सहित जा पहुंचे। श्री अमृतसर साहिब का प्रबंध उस समय भंगी मिसल के अधीन था। दोनों पक्ष आमने-सामने होने ही वाले थे, श्री अमृतसर साहिब में पहले से ही उपस्थित अकाली फूला सिंघ दोनों के बीच जा खड़े हुए और उन्हें आपस में युद्ध करने से रोक दिया। महाराजा रणजीत सिंघ बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपनी फ़ौज को पीछे हट जाने का आदेश दे दिया। बाद में भंगी मिसल के लोगों ने भी महाराजा की अपील को स्वीकार कर उन्हें श्री अमृतसर साहिब का प्रबंध दे दिया, जिसकी एवज में महाराजा ने उन्हें बड़ी जागीर लिख दी। इससे अकाली फूला सिंघ की छवि एक सूझबूझ वाले सिक्ख नेतृत्वकर्ता की बन गई। महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य के प्रसार में अकाली फूला सिंघ का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सन् १८०७ में हुए कसूर के युद्ध में महाराजा ने अकाली फूला सिंघ की सहायता माँगी और उनके सहयोग से यह युद्ध जीता। वे अकाली फूला सिंघ की वीरता के प्रशंसक हो गये।

उधर शाह जमान ने पंजाब पर अंतिम आक्रमण सन् १७९८ में किया था। स्थानीय मुस्लिम सूबेदारों को उसने अपने साथ मिला लिया था। वह सिक्खों की ताकत को नष्ट करना चाहता था। इस संकट के संदर्भ में बाबा साहिब सिंघ (बेदी) ने एक 'सरबत्त खालसा' बुलाया, जिसमें सभी मिसलों के लोग शामिल हुए थे। इस 'सरबत खालसा' में अकाली फूला सिंघ को सर्वसम्मति से श्री अकाल तख़्त साहिब का जत्थेदार चुना गया। एकता का संकल्प लिया गया। श्री अकाल तख़्त साहिब का जत्थेदार बनने के बाद उन्होंने उन सभी को सेवा से हटा दिया, जो केवल धन के लोभ में कार्य कर रहे थे और भीतरी साजिशों में लगे रहते थे। अकाली फूला सिंघ ने यह अनिवार्य कर दिया कि श्री अकाल तख़्त साहिब में सेवा का कार्य केवल अमृतधारी सिक्ख ही कर सकेंगे। श्री अकाल तख़्त साहिब की प्राचीन मर्यादा बहाल की गई और प्रात: ढाडी जत्थों द्वारा वारों का गायन, दोपहर के पश्चात कथा आदि फिर से आरम्भ हो गये। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि श्री अकाल तख़्त साहिब से जारी आदेश को मानना सभी के लिए अनिवार्य होगा, वो चाहे कोई भी हो। इसके साथ ही उन्होंने प्रचलित उन परम्पराओं को तुरंत बंद करा दिया

जो गुरमति के सिद्धांतों के विरुद्ध थीं। अकाली फूला सिंघ के आने से सिक्ख पंथ की सर्वोच्च स्थानों श्री दरबार साहिब तथा श्री अकाल तख़्त साहिब की पवित्रता पुनः स्थापित हुई और पैदा हो गये भ्रम भी खंडित हुए। ऐसा एक सक्षम और दृढ़ नेतृत्वकर्ता ही कर सकता था जिसके सारे गुण अकाली फूला सिंघ में पहले से ही विद्यमान थे।

मुगल शासन का अवसान हो आया था और अंग्रेज अपना प्रभाव निरंतर बढ़ाते जा रहे थे। उन्होंने महाराजा रणजीत सिंघ की भी घेराबंदी आरम्भ कर दी थी। अकाली फूला सिंघ, जो सिक्ख राज्य के हितों के लिये सदैव गंभीर रहते थे, महाराजा को सलाह दी कि वे अंग्रेजों द्वारा अपनाये कठोर रुख का डट कर विरोध करें। उन्होंने अपनी तरफ से पूरी सहायता का आश्वासन दिया। अंग्रेजों और सिक्खों में जब तनाव बढ़ गया तो महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने राज्य के सुरक्षा प्रबंध करड़े करने के कदम उठाये और संभावित युद्ध की तैयारी आरम्भ कर दी। जब उन्होंने अपने सलाहकारों से मंत्रणा की तो अधिकांश राय युद्ध टालने और अंग्रेजों से संधि करने के पक्ष में आई। विचार-विमर्श के बाद महाराजा ने अंग्रेजों से संधि का मन बना लिया। इस मध्य अंग्रेज अधिकारी मेटकॉफ, दर्शनार्थ श्री दरबार साहिब गया तो उसने कुछ सेवादारों को रुपये भेंट में दिये। अकाली फूला सिंघ को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने इसे बड़ी गंभीरता से लिया। अंग्रेज इस बात से चिढ़ गये। महाराजा रणजीत सिंघ ने अंग्रेजों से संधि कर ली किन्तु अकाली फूला सिंघ को यह बात सिक्ख राज्य के लिये अहितकर लगी, इसलिये वे अमृतसर साहिब छोड़ कर अपने दल के साथ श्री दमदमा साहिब चले आये और स्थानीय गुरुद्वारों की सेवा करने लगे। अंग्रेजों से टकराव के कारण अकाली फूला सिंघ अंग्रेज़ों को चुभने लगे। अकाली फूला सिंघ अंग्रेजों को देश का दुश्मन समझते थे। इस बात से अंग्रेज भली-भांति परिचित थे, किन्तु उनकी शक्ति के आगे विवश थे। महाराजा भी कुछ नहीं कर सकते थे। कुछ समय पश्चात अकाली फूला सिंघ श्री अमृतसर साहिब वापिस आ गये। महाराजा ने उनसे अनेक बार लाहौर, जो सिक्ख राज्य का केंद्र था, आकर रहने का अनुरोध किया किन्तु उन्होंने श्री अमृतसर साहिब रहना ही उचित समझा। महाराजा रणजीत सिंघ की कई नीतियां अक्सर उन्हें पसंद नहीं आती थीं।

एक बार महाराजा रणजीत सिंघ काश्मीर की एक नर्तकी मोरां के रूप-जाल में फंस गये। इसके बाद जब महाराजा ने मोरां के नाम से राजकीय मुद्रा जारी करने का प्रयास किया तो अकाली फूला सिंघ ने सिक्ख मर्यादा के उल्लंघन का आरोप लगा कर उन्हें 'तनखाईया' घोषित कर दिया। अकाली फूला सिंघ ने महाराजा पर पांच कोड़े मारने और सवा लाख रुपये दंड देने की सजा लगाई। कहा जाता है कि महाराजा रणजीत सिंघ को श्री अकाल तख़्त साहिब के

निकट इमली के पेड़ के साथ बाँध कर कोड़े मारने वाला हाथ उठने ही जा रहा था कि अकाली फूला सिंघ ने रोक दिया और कहा कि इतना ही काफी है कि महाराजा ने कोड़े खाने के लिये स्वयं को प्रस्तुत किया है। उनके परामर्श पर ही महाराजा ने स्वयं को नर्तकी मोरां से दूर कर लिया और उसके रहने का अन्यत्र प्रबंध कर दिया।

महाराजा रणजीत सिंघ को एक बार और श्री अकाल तख़्त साहिब से दंड दिये जाने का उल्लेख मिलता है। महाराजा को हैदराबाद से एक हीरे-जड़ित 'चंदोवा' उपहार में मिला था। उसे ताना गया और महाराजा उसके नीचे बैठे। उनके मन में विचार आया कि ऐसा मूल्यवान 'चंदोवा' तो श्री दरबार साहिब की शोभा बनना चाहिये। वह 'चंदोवा' श्री दरबार साहिब में भेंट कर दिया गया। अकाली फूला सिंघ को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने कहा कि महाराजा ने स्वयं प्रयोग की हुई वस्तु गुरु-घर को भेंट कर अपमान किया है। इसके लिये उन्होंने महाराजा पर आर्थिक दंड लगाया। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए अर्थ-दंड भरा। यह थी मर्यादा के पालन एवं रक्षा हेतु अकाली फूला सिंघ की अद्धितीय प्रतिबद्धता और दृढ़ता कि उन्हें यह परवाह बिलकुल नहीं थी कि दोषी कौन है।

उस समय के सबसे शक्तिशाली सिक्ख सम्राट महाराजा रणजीत सिंघ के अपराध भी उनके लिये अक्षम्य थे। दूसरी बात यह कि राज-काज में महाराजा रणजीत सिंघ का डोगरों तथा अन्य लोगों पर अंधविश्वास अकाली फूला सिंघ को इसलिये नहीं भाता था कि इसमें वे सिक्ख राज का अहित देखते थे। यह उन्होंने महाराजा को स्पष्ट भी कर दिया था। महाराजा द्वारा रंग-ढंग न बदलने पर वे श्री अमृतसर साहिब से श्री अनंदपुर साहिब आ गये। अंग्रेज इससे सतर्क हो गये। इस बीच अकाली फूला सिंघ ने जींद के बागी राजकुमार को शरण भी दे दी।

महाराजा रणजीत सिंघ अपने राज्य का निरंतर विस्तार करते जा रहे थे। इस दौरान युद्धों में जब भी आवश्यकता हुई, मतभेदों के बावजूद अकाली फूला सिंघ अपने दल के साथ महाराजा की सहायता करते रहे और अनेक युद्ध जीते, जैसे काश्मीर तथा पेशावर जीतने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाराजा ने एक बार उन्हें कोई राजकीय पद देना चाहा तो अकाली फूला सिंघ ने इन्कार कर दिया और कहा कि उनका उद्देश्य पंथ की सेवा करना है ना कि पद और पैसा हासिल करना।

एक बार महाराजा रणजीत सिंघ को गुप्तचरों ने सूचना दी कि नौशहरा के पार तरक्की नाम की पहाड़ी पर गाजियों ने मोर्चा लगा लिया है। उनकी संख्या लगातार बढ़ रही है। महाराजा ने सभी से परामर्श किया और श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष यह निर्णय हुआ कि वैरी पर तुरंत आक्रमण किया जाये। इसके लिये विधिवत अरदास की गई। आक्रमण के लिये सिक्ख फौज को तीन हिस्सों में बांटा गया। एक हिस्से का नेतृत्व अकाली फूला

सिंघ को सौंपा गया। सिक्ख दल रवाना हो ही रहे थे कि गुप्तचरों ने एक और सूचना दी कि मुहम्मद अजीम खान दस हजार अफगानी सिपाहियों को पचास बड़ी तोपों के साथ नदी पार करा रहा है। इससे शत्रु की ताकत बहुत बढ़ जायेगी। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपनी फौजों को रोकते हुए कहा कि हमारी संख्या उनके मुकाबले बहुत कम है, इसलिये अभी हमला करना ठीक नहीं होगा। अकाली फूला सिंघ अड़ गये कि अब तो गुरमता हो चुका है और अरदास की जा चुकी है, इसलिए रुका नहीं जा सकता, यह पंथ के सिद्धांतों के विरुद्ध होगा। 'गुरमता' और 'अरदास' के विरुद्ध जाने से अच्छा है शहीद हो जाना। यह कह कर अकाली फूला सिंघ बिना प्रतीक्षा किये अपने जत्थे के साथ आगे बढ़ गये। नदी पार करके आती अफगानी फ़ौज पर अकाली फूला सिंघ और उनका दल शेरों की तरह टूट पड़ा। भीषण युद्ध छिड़ गया। वैरी फ़ौज को पीछे धकेलते हुए अकाली फूला सिंघ आगे तक निकल गये। जब महाराजा ने यह देखा तो उनकी सहायता के लिये सिक्खों के अन्य दल रवाना कर दिये। बड़ी संख्या में अफगानी मौत के घाट उतारे जाने लगे। अकाली फूला सिंघ का घोड़ा घायल हो गया तो वे फुर्ती से हाथी पर सवार हो गये। युद्ध में महाराजा का बड़ा तोपखाना भी पहुंच गया, जिससे वैरी घबरा गया। इस बीच छिप कर बैठे हुए एक पठान ने कार्बाइन से अकाली फूला सिंघ पर गोलियां दाग दीं। सिक्खों ने यह युद्ध जीत लिया, किन्तु इसकी कीमत थी अकाली फूला सिंघ की शहीदी। एक ऐसी शहीदी, जो 'गुरमता' और 'अरदास' की मर्यादा बनाए रखने के लिये दी गई थी। शहीदियां तो असंख्य हुई हैं सिक्ख इतिहास में, किन्तु ऐसी शहीदी दूसरी नहीं मिलती, क्योंकि अकाली फूला सिंघ जैसा व्यक्तित्व कोई दूसरा हुआ ही नहीं।

अकाली फूला सिंघ को एक ऐसे योद्धा के रूप में सदैव आदर दिया जाता रहेगा, जिन्होंने अपना पूरा जीवन केवल परमात्मा का भय धारण कर निर्भीकता से जीया। उनकी स्पष्टवादिता के कायल वे भी थे जिनसे अकाली फूला सिंघ भिन्न राय रखते थे। महाराजा रणजीत सिंघ के साथ उनके प्रकट मतभेद रहे किन्तु महाराजा ने सदैव उनसे अच्छे संबंध बनाने का यत्न किया और उनका आदर भी करते रहे। दूसरी ओर अकाली फूला सिंघ ने पंथ-हित को देखते हुए सदैव महाराजा का सहयोग किया, साथ दिया। यह उनके हृदय की निर्मलता और उदारता का अकाट्य प्रमाण था। आज भी यह प्रेरणादायक है कि जब पंथ का हित हो, कौम का कार्य हो, तो उसे एक साथ मिल कर सम्पन्न करना ही सच्चा सिक्ख होना है।

सद्भावना, समानता और भाईचारे का आधार-स्तंभ है : गुरबाणी

*–डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

गुरमति विचारधारा के अनुसार हमारे जीवन में जहां सदाचार, नैतिकता, ईमानदारी, दया, सहिष्णुता, आचरण व व्यवहार की शुद्धता, परोपकारी भावना, श्रम, प्रभु-भक्ति का महत्व है, वहां सद्भावना, समानता (समाजवाद), भाईचारा, सौहार्द्र, आपसी प्रेम, समदृष्टि का भी महत्त्व बहुत ज्यादा है। कर्मों की भी काफी अहमियत है। वाहिगुरु की दृष्टि में जात-पाँत का कोई महत्व नहीं और उसके द्वार पर, इंसान के कर्मों का लेखा-जोखा किया जाता है। इस संबंध में गुरबाणी का फरमान है :

—जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३३०)

—जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३४९)

—करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १५७)

गुरबाणी हमें सेवा, सब्र, संतोष, प्रभु की रज़ा में रहने और सतिगुरु के हुक्म को मानने जैसे गुण धारण करने की, सत्य के मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलने की प्रेरणा देती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज गुरबाणी का प्रत्येक उपदेश समाज के प्रत्येक वर्ग, जमात, समुदाय के लोगों के लिए सर्वसाझा है :

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७४७)

गुरबाणी अन्यान्य उपदेश बख्शिश करती है :

—ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२९९)

—सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६७१)

यदि हम सभी भाई-भाई हैं, सबका संबंध एक परमात्मा के साथ है, तो किसी भी तरह का भेदभाव समाज में नहीं पनपना चाहिए :

सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९७)

सभी प्राणियों में एक ही अकाल पुरख की ज्योति विद्यमान है। ऐसे में किसी को अच्छा या बुरा, ऊँचा या नीचा कैसे कहा जा सकता है?

—एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४९)

—सभै घट रामु बोलै रामा बोलै॥
राम बिना को बोलै रे॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९८८)

प्रभु का नाम सच्चा, ऊंचा और सबसे पवित्र है। सच्चाई के रास्ते पर चलने वालों को प्रभु प्रेम करता है। पापों से मुक्ति दिलाने के लिए सच से बढ़कर कोई औषधि नहीं है, यथा :

—सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ॥
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६८)

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५७९९०

—सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६२)

—कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७५३)

गुरबाणी सबके कल्याण व उत्थान की कामना करती है, वैश्विक सीमाओं को परास्त करते हुए सबके भले की कामना करती है :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८५३)

हमारे रूढ़िवादी समाज में जहां तथाकथित दलितों व पिछड़ों को प्रताड़ित किया जाता था, वहां स्त्री वर्ग को भी हेय दृष्टि से देखा जाता था। पुरुष-प्रधान समाज ने इसे अपने प्रभाव में रखा हुआ था। स्त्री को दासी, पैर की जूती, भोग की वस्तु ही समझा जाता था। गुरबाणी स्त्री जाति को पूरा सम्मान देते हुए पुरुष-प्रधान समाज को शिक्षा देती है :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७३)

क्रूर, असभ्य, पिछड़े तथा रूढ़िवादी समाज में एक स्त्री के पति के मर जाने पर उसे पति के शव के साथ ही चिता में जीते-जी जल जाने पर विवश किया जाता था। इसे सती-प्रथा के नाम से जाना जाता था। इस प्रथा के नाम पर स्त्रियों के साथ घोर अन्याय व क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया जाता था। इस कुप्रथा की श्री गुरु ग्रंथ साहिब में घोर निंदा (कटु आलोचना) की गई है :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७८७)

अर्थात् उन स्त्रियों को सती नहीं कहा जा सकता, जो पति के मरने पर चिता में जलकर मर जाती हैं। वास्तव में वे सती हैं, जो पति की मृत्यु के बाद विरह की चोट को ताउम्र सहती हैं, उसी दशा में मरती हैं।

गुरबाणी हमें यह उपदेश भी देती है कि सच्ची किरत (श्रम) करनी चाहिए और ज़रूरतमंदों की सहायता करनी चाहिए। परोपकार के रास्ते को अपनाना चाहिए।

घालि खाइ किछु हथहु देइ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२४५)

एक स्वस्थ व स्वच्छ तथा आदर्श समाज की स्थापना हेतु जहां ईमानदारी, नैतिकता, न्याय की आवश्यकता होती है, वहां सच्ची किरत, नेक कमाई का होना भी ज़रूरी है।

गुरमति विचारधारा भ्रमों, पाखंडों, आडंबरों, खोखले कर्मकांडों का पुरज़ोर शब्दों में खंडन करती है। इस महान विचारधारा के अनुसार हर कोई सत्य के मार्ग पर चलते हुए अपने-अपने धर्म के नियमों का पालन करे :

—सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै॥
आपि तरै सगले कुल तारै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६६२)

—मुसलमाणु मोम दिलि होवै॥
अंतर की मलु दिल ते धोवै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०८४)

—सो संनिआसी जो सतिगुर सेवै विचहु आपु गवाए॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०१३)*

—सो जोगी जो जुगति पछाणै॥
गुर परसादी एको जाणै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६६२)

—बिनु बैराग कहा बैरागी॥

बिनु हउ तिआगि कहा कोऊ तिआगी ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११४०)

जो प्रशासक एवं शासक लोगों पर अत्याचार करते हैं, लोगों का शोषण करते हैं, उनकी कड़े शब्दों में आलोचना की गई है, यथा :

—राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२८८)

—जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४०)

वैश्विक सद्भावना और भाईचारे का संदेश देने वाले श्री गुरु ग्रंथ साहिब की महिमा व महानता सर्वकालीन एवं सर्वोपरि है। यह महिमा व महानता अकथनीय है :

गुर की महिमा अगम है किआ कथे कथनहारु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५२)

श्री गुरु नानक देव जी के समय शासकों व प्रसासकों का प्रजा के प्रति जो निंदनीय व निकृष्ट व्यवहार था, वैसा ही व्यवहार आज के अहंकारी व क्रूर शासकों एवं प्रशासकों का अपनी जनता के प्रति है। ऐसे में झूठ का अंधेरा छा जाता है तथा सच का चांद (प्रकाश) दिखाई नहीं देता। ऐसे हाकिमों को 'कसाई' कहना ही उचित है :

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४५)

गुरु जी का पवित्र फरमान है कि सभी में परमात्मा की ज्योति विद्यमान है और उसके प्रकाश से ही सब जगह प्रकाश है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३)

श्री गुरु नानक देव जी ने हमारा मार्गदर्शन करने हेतु तथाकथित नीची जाति, श्रमिक वर्ग के लोगों के साथ अपनत्त्व व प्यार कायम किया। उन्होंने जाति की जगह ज्योति को मान्यता एवं महानता प्रदान की और फरमान किया :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १५)

गुरबाणी का प्रत्येक फरमान और उपदेश समाज को सही दिशा दिखाने वाला है। गुरबाणी की महिमा और महानता का वर्णन शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। गुरबाणी ने स्वस्थ, स्वच्छ, स्वार्थहीन, आदर्श समाज की स्थापना हेतु जो मज़बूत आधार तैयार कर विश्व को प्रदान किया है, उसका लाभ दुनिया के प्रत्येक वर्ग, वर्ण, समुदाय के लोगों को उठाना चाहिए। गुरबाणी के उपदेशों व आदेशों का पालन कर वैश्विक सद्भावना, एकता, समानता और भाईचारे को मज़बूत किया जा सकता है; ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, अहंकार, वैमनस्यता, द्वैत, फिरकापरस्ती, कट्टरता, नस्लवाद, लोभ-लालच, स्वार्थ आदि से छुटकारा हासिल किया जा सकता है। फिर तो सब प्रकार के लड़ाई-झगड़ों का अंत, शोषण का अंत हो जाएगा। गुरबाणी को आत्मसात कर वैश्विक शांति के संकल्प को पूरा किया जा सकता है, अचेत शासकों एवं प्रशासकों को सचेत किया जा सकता है।

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु॥

*–डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति**

सृष्टि में जितने भी जीव पैदा हुए हैं उन सबको जीने के लिए श्रम, प्रयास करना पड़ता है। जितना मर्ज़ी कोई बेबस-लाचार हो, कम से कम रोटी खाने के लिए, मुँह में कुछ डालने के लिए, मुँह हिलाने के लिए प्रयास तो करना ही पड़ता है। यह बात अलग है कि आधुनिक मेडिकल विज्ञान द्वारा सुइयों या नालियों के माध्यम से कुछ दवाएँ और खाने का सामान शरीर में भेजने का प्रयास किया जाता है। दूसरी तरफ़ शरीर में पहुंचाए गए खाद्य-पदार्थों को हज़म करने के लिए एक व्यक्ति को शरीर के सूक्ष्म स्तर पर श्रम करना ही पड़ता है। हम सभी जीते हैं और जीने का घटनाक्रम प्राकृतिक है। जिंदा व्यक्ति को परखने के लिए कुदरत ने दो मुख्य क्रियाएं प्रदान की हैं— साँस और दिल की धड़कन को चलता रखना। ये दोनों क्रियाएं हर वक्त, चौबीस घंटे बिना किसी रुकावट के चलती रहती हैं। यह प्रयास कुदरत द्वारा सृजित है जो कि लगातार जारी रहता है।

इस प्रयास के लिए चाहे भोजन है या पाचन-क्रिया, शरीर को ऊर्जा की ज़रूरत पड़ती है, जिसे वैज्ञानिक भाषा में 'कैलोरीज' कहते हैं। यह ऊर्जा भी हमें प्राकृतिक स्रोतों अथवा खाद्य-पदार्थों से मिलती है। प्रत्येक प्राकृतिक पदार्थ में ऊर्जा (कैलोरीज) विद्यमान होती है। इसका सबसे बड़ा स्रोत रोज़ाना इस्तेमाल किए जाने वाला अनाज है।

जब हम "उदमु करेदिआ जीउ" की बात करते हैं तो अनाज पैदा करने के लिए भी मेहनत-मुशक्कत करनी पड़ती है। कहने से तात्पर्य— श्रम ज़िंदगी का सार है, जिसके बिना हम जीने के बारे में सोच भी नहीं सकते। जब जीने की बात आती है, तो स्वस्थ जीवन जीना भी आवश्यक है। हम देखते हैं कि बढ़ती उम्र के साथ-साथ बुज़ुर्गों के घुटने, कंधे तथा शरीर के अन्य जोड़ या तो जाम हो जाते हैं या दर्द करने लग जाते हैं। वर्तमान रहन-सहन के स्वभाव के मुताबिक आजकल अधेड़ उम्र में ही कमर, गर्दन आदि में दर्द की शिकायत काफ़ी बढ़ गई है। जोड़ों का जाम होना आम होता जा रहा है, जिसका बड़ा कारण यह है कि हमने अपनी ज़िंदगी में श्रम करना कम कर दिया है या बंद ही कर दिया है। हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर नज़र डाल कर देखें, तो अनुभव होगा कि हम रिमोट कंट्रोल वाली ज़िंदगी जीने के आदी हो गए हैं या यूं कहें कि श्रम करने, कामकाज न करने वाले को हम बढ़िया समझते हैं और उसे अपने रुतबे के साथ जोड़ते हैं।

यदि ज़िंदगी को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो

*१७, गुरु नानक एवेन्यू, मजीठा रोड, श्री अमृतसर साहिब—१४३००१; फोन : ९८१५८-०८५०६

रसोई से लेकर किसी भी मॉल या दुकान की सीढ़ियों की जगह पर लिफ्ट या एक्सीलेटर का इस्तेमाल करने को प्राथमिकता दी जाती है। धीरे-धीरे घरों और दुकानों के दरवाज़े भी खुद खुलने-बंद होने लगे हैं। ऐसा करते हुए हम ख़ुशी महसूस करते हैं और अचेत रूप से हमें पता ही नहीं चलता कि हम कुदरत द्वारा मिले हाथ, पैर या पैर की उंगलियों का प्रयोग न कर उनके जोड़ों में जंग लगाने का काम कर रहे हैं। फिर डॉक्टरी इलाज के नाम पर सरवाईकल या कंधे के फाईफरोशिस (जुड़ना) के रूप में अस्पतालों के चक्कर लगाने की तरफ स्वयं को धकेल रहे होते हैं।

गुरबाणी के इस वाक्य का दूसरा हिस्सा है—"सुख भुंचु" या एक अन्य वाक्य है "सोई कंमु कमाइ जितु मुखु उजला॥" हमने मानव के शारीरिक पक्ष की बात की है, जबकि मानव का मानसिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि मानव को वो कार्य करना चाहिए जो शारीरिक सुख प्रदान करने के साथ-साथ मानसिक संतुष्टि व प्रसन्नता भी प्रदान करे। जब प्रसन्नता हासिल होती है तो वह चेहरे पर झलकती है। हमारा मुख चमक द्वारा उजला हो जाता है।

कहने से तात्पर्य यह है कि हमें श्रम तो करना है, उसकी ज़रूरत भी है, वह जीवन की निशानी है। अपना काम करते हुए सोचें और विचार करें कि कर्म करने से हमें संतुष्टि और ख़ुशी मिलती है या नहीं! आज जब Holistic Health की बात हो रही है मतलब मुकम्मल स्वास्थ्य की बात हो रही है तो वह केवल शारीरिक न हो, बल्कि मानसिक भी हो, जबकि कई विज्ञानी इससे भी आगे आत्मिक सेहत की भी बात कर रहे हैं।

आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान, शरीर के साथ-साथ मन की भी बात कर रहा है, इसीलिए मानसिक विकारों के माहिर भी आ गए हैं। हालाँकि स्वास्थ्य का एक और अहम पक्ष 'सामाजिक स्वास्थ्य' पर विचार करने की माँग करता है। इसके अंतर्गत मानवीय रिश्तों की बदल रही तसवीर तथा आपसी प्रेम-प्यार का जिस तरह रूप बदल रहा है वह भी मानव स्वास्थ्य को लेकर सवालों के घेरे में आ रहा है। ये रिश्ते भी, आपसी मेल-मिलाप भी, ज़िंदगी में सुख और ख़ुशी का साधन न बन कर परेशानी का कारण बन रहे हैं।

यदि इन सभी पक्षों को चंद शब्दों में समेटना हो तो हम कह सकते हैं कि रहन-सहन, खान-पान, उठने-बैठने, मेल-मिलाप आदि सभी पक्ष प्राकृतिक ज़रूरत के अनुकूल होने चाहिए। हमें एक बार फिर से विचार करने की आवश्यकता है कि हम कुदरत के साथ जुड़ें और कुदरत की चाल-ढाल के मुताबिक ख़ुद को ढालें न कि कुदरत के साथ छेड़छाड़ करें और न ही उसे अपनी सुख-सुविधा के अनुसार इस्तेमाल करने की कोशिश करें!

सिक्ख धर्मानुसार नारी-उत्थान

*–स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन'**

सिक्ख धर्म विश्व की उन धार्मिक व दार्शनिक परंपराओं में से है, जिसने अपने उद्भव काल से ही नारी को समान, स्वतंत्र और सम्मानजनक स्थान प्रदान किया। जब मध्यकालीन भारतीय समाज में नारी को अधीन, अशुद्ध और निर्बल समझा जाता था, तब सिक्ख गुरुओं ने गुरबाणी के माध्यम से नारी की आध्यात्मिक समानता, सामाजिक गरिमा और नैतिक शक्ति को सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनों स्तरों पर स्थापित किया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी, गुरु साहिबान के उपदेश, ऐतिहासिक उदाहरण तथा खालसा परंपरा, नारी-उत्थान की अवधारणा में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। सिक्ख धर्म में नारी-उत्थान कोई सहायक या गौण विचार नहीं, बल्कि गुरमति का केंद्रीय सिद्धांत है।

प्रस्तावना : नारी-उत्थान आधुनिक युग का चर्चित विषय अवश्य है, किंतु इसका मूल प्रश्न मानव सभ्यता जितना ही पुराना है। भारतीय उपमहाद्वीप में लंबे समय तक नारी को सामाजिक, धार्मिक और बौद्धिक दृष्टि से सीमित रखा गया। सती-प्रथा, पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह, विधवा-दमन और अशिक्षा जैसी कुरीतियों ने नारी को एक निष्क्रिय सामाजिक इकाई बना दिया।

ऐसे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में, १५वीं शताब्दी में सिक्ख धर्म का उदय सामाजिक, धार्मिक व आध्यात्मिक क्रांति के रूप में हुआ। श्री गुरु नानक देव जी से आरंभ होकर, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक, सिक्ख गुरुओं ने नारी को केवल करुणा का पात्र नहीं, बल्कि समाज-निर्माण की सक्रिय शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया।

गुरमति दर्शन और नारी-समता का सिद्धांत : समता का सिद्धांत, सिक्ख दर्शन का मूल सिद्धांत है। यह अकाल पुरख द्वारा दिए गए समानता के सिद्धांत का उद्घोष है, जो सभी प्रकार के भेदों— जाति, वर्ग, लिंग आदि को अस्वीकार करता है। अकाल पुरख एक है और वही सभी का सृष्टा है तो नारी-पुरुष का

** ७६, फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना—१४१०१३, फोन : ९७७९१-२४५००*

भेद दार्शनिक रूप से ही असंगत हो जाता है। गुरबाणी नारी-उत्थान की दार्शनिक आधारशिला है।

नारी को हीन मानने वाली मानसिकता का खंडन : श्री गुरु नानक देव जी ने अपने समय की सामाजिक कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया। आप जी का प्रसिद्ध कथन है :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७३)

भावार्थ : जिस स्त्री जाति से राजा भी जन्म लेते हैं, उस स्त्री जाति को तिरस्कृत करना ठीक नहीं।

यह केवल नारी की प्रशंसा नहीं, बल्कि पितृसत्तात्मक सोच पर दार्शनिक प्रहार है।

नारी-जीवन और समाज की आधारशिला : श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७३)

भावार्थ : स्त्री से ही जन्म होता है, स्त्री के पेट में ही बच्चा पलता है और स्त्री के साथ ही व्यक्ति की सगाई व विवाह होते हैं।

यहाँ नारी को समाज की केंद्रीय धुरी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सती-प्रथा का विरोध : सती-प्रथा के विरुद्ध सबसे पहले आवाज गुरु साहिबान ने बुलंद की। श्री गुरु अमरदास जी ने सती-प्रथा को अमानवीय बताते हुए कहा :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि॥

नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७८७)

भावार्थ : सती वह नहीं होती जो अपने पति की चिता में जलकर मर जाए, अपितु सती तो वह होती है जो अपने पति के बिछड़ने के विरह में ही मर जाए।

सिक्ख दृष्टि में नारी का जीवन ईश्वर की भक्ति और सेवा के लिए है, न कि मृत्यु के लिए।

गुरबाणी में नारी-दमनकारी परंपराओं की आलोचना : गुरबाणी में समुचित रूप से नारी को अशुद्ध या पाप का कारण मानने की धारणा का कोई स्थान नहीं। इसके विपरीत, गुरबाणी ऐसी धारणाओं को अज्ञान का परिणाम बताती है।

गुरमति में नारी, माया नहीं, शक्ति है : अन्य परंपराओं में जहाँ नारी को माया का प्रतीक कहा गया है, वहाँ गुरमति में माया, अज्ञानता का परिणाम है, नारी नहीं। ज्ञान और धर्म में नारी समान भागीदार है।

नारी, शिक्षा और स्वतंत्रता : सिक्ख गुरुओं

ने नारी-शिक्षा को अनिवार्य माना है। गुरबाणी में अज्ञान को बंधन कहा गया है और यह बंधन नारी-पुरुष दोनों के लिए समान है।

सिक्ख इतिहास में नारी की सक्रिय भूमिका : माता खीवी जी और लंगर-परंपरा : माता खीवी जी श्री गुरु अंगद देव जी की पत्नी थीं और सिक्ख समाज की संगठक थीं। गुरबाणी में उनका उल्लेख स्वयं नारी के सामाजिक योगदान की मान्यता है :

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६७)

बीबी भानी जी : बीबी भानी जी ने गुरु-घर की सेवा करते हुए, सिक्ख परंपरा की निरंतरता को सुरक्षित रखा। उनका जीवन सेवा और नेतृत्व का आदर्श है।

माता गुजरी जी : माता गुजरी जी का जीवन साहस, त्याग और आध्यात्मिक दृढ़ता का प्रतीक है। छोटे साहिबज़ादों को दी गई उनकी शिक्षा, सिक्ख नारी की आध्यात्मिक शक्ति को दर्शाती है।

खालसा पंथ तथा नारी : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की स्थापना कर, नारी को 'कौर' की उपाधि प्रदान की। आप जी ने स्त्री को आत्मसम्मान, निर्भीकता और धार्मिक दीक्षा में समान अधिकार प्रदान किए।

माता साहिब कौर जी - खालसे की माता : माता साहिब कौर जी को 'खालसे की माता' का दर्ज़ा देना, सिक्ख इतिहास में नारी को दिया गया सर्वोच्च सम्मान है।

आधुनिक संदर्भ में सिक्ख नारी-उत्थान : आज सिक्ख नारी शिक्षा, प्रशासन, सेना और राजनीति-क्षेत्र में अग्रणी होने के साथ-साथ, गुरुद्वारा-प्रबंधन, मानवाधिकार, समाज-सेवा आदि क्षेत्रों में भी सक्रिय भूमिका निभा रही है। यह गुरमति का जीवंत रूप है। यद्यपि सिक्ख धर्म में नारी को सैद्धांतिक समानता प्राप्त है, किंतु व्यवहारिक स्तर पर अभी भी कहीं-कहीं चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। इस दिशा में प्रयास निरंतर जारी रहने चाहिए।

निष्कर्ष : सिक्ख धर्मानुसार नारी-उत्थान सुधारात्मक नहीं, बल्कि मौलिक सिद्धांत है। यह सामाजिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक सत्य है; अस्थायी नहीं, बल्कि कालातीत दर्शन है। गुरबाणी नारी को जीवन की परिधि पर नहीं, बल्कि उसके केंद्र में स्थापित करती है।

गुरमति अनुसार प्रेम : प्रकृति एवं प्रकार

–डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ*

विषय-प्रवेश : प्रेम एक बड़ा जटिल संकल्प है, जिसकी व्याख्या समय-समय पर बदलती रहती है। इस शब्द को कई तरह की अहमियत (Values) के साथ जोड़ा जाता है। प्रेम, देखभाल तथा समर्थन, ऐसे भाव हैं, जो परस्पर रिश्तों में आम देखने को मिलते हैं, परंतु आज के समय के दौरान करोना महामारी के कारण यह मनोभाव व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर कम होता देखा गया है। वर्तमान समय में मानवीय जीवन में से आकर्षण और लगाव बड़ी तेजी के साथ ख़त्म हो गए हैं। करोना महामारी के दौरान मानव इतना भयभीत दिखाई दिया, जिसने अपने अज़ीज़ लोगों की लाशों का अंतिम संस्कार तक न किया। अपने आप को करोना महामारी के जानलेवा हमले से बचाने के लिए मानव जाति का एकमात्र स्व-केंद्रित उद्देश्य बन गया। वर्णनीय है कि जब भी किसी रिश्ते में चुनौतियां पेश आती हैं तो इस रिश्ते को सुरक्षित रखने के लिए एक नियमित ढंग होता है। करोना महामारी ने मानवीय रिश्तों को प्रभावित अवश्य किया, मगर इसके साथ यह तथ्य भी सामने आया है कि बेशक सांसारिक प्रेम मानवमात्र के लिए ज़रूरी है, लेकिन नि:स्वार्थ एवं शाश्वत प्रेम तो परमात्मा के साथ ही हो सकता है।

इस आलेख में सांसारिक और हकीकी प्रेम पर विस्तृत विचार पेश जी रहा जा रहा है। 'प्रेम' को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के दायरे में रख कर समझने का यत्न किया गया है। 'प्रेम' का अध्ययन करते समय इसके अर्थ, परिभाषा तथा इसके प्रकार आदि पर भी विचार किया गया है, जो कि निम्नानुसार है : —

प्रेम : अर्थ : प्रेम कोई चंचल, उतावला मनोभाव नहीं, बल्कि प्रेम एक शांतचित्त, गंभीर, संतोषी मन:वृत्ति है। भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार 'प्रेम' शब्द के अर्थ हैं— "प्यार का भाव, स्नेह।"[१] भाई वीर सिंघ के अनुसार, "प्रेम से तात्पर्य है— प्यार, प्रीति और स्नेह।"[२] डॉ. जसवंत सिंघ नेकी ने प्रेम को संस्कृत भाषा की संज्ञा बताते हुए इसका अर्थ 'प्यार' किया है।[३]

प्रेम : परिभाषा : प्रेम एक एहसास है, जिसे पारिभाषित करना सरल कार्य नहीं, फिर भी विभिन्न विद्वानों ने अपनी-अपनी बुद्धि के आधार पर प्रेम को परिभाषित किया है, जैसे ज्ञानी मनी सिंघ के अनुसार प्रेम से तात्पर्य है— दिल को भाना। उनका मानना है कि दो रूह और एक ख़्याल, दो दिल और एक आवाज़ का नाम 'प्रेम' है।[४] डॉ.

*सहायक प्रोफेसर (धर्म अध्ययन), यूनिवर्सिटी कॉलेज, मीरांपुर, पटियाला—१४७१११, फोन : ९९८८०-०४७३३

तारन सिंघ की दृष्टि में प्रेम एक ऐसा अंश है, जो कर्म, ज्ञान और योग में सहजता से शामिल है। डॉ. गुरभगत सिंघ 'नेहु की आशिकी' या 'दैवी आशिकी' के संकेत के द्वारा प्रेम की व्याख्या करते हैं।[६]

प्रेम : प्रकार : विद्वानों ने 'प्रेम' के निम्नलिखित चार प्रकार बताए हैं :—

१. प्रभाव-रसूख के कारण प्रेम : पहले प्रकार का प्रेम किसी प्रभाव के कारण होता है। प्रभाव रहने तक व्यक्ति की मोहब्बत बनी रहती है। प्रभाव ख़त्म होने पर प्रेम भी ख़त्म हो जाता है। ऐसा कच्चा प्रेम केवल मतलब का होता है। दुनिया का प्रेम इसी श्रेणी में आता है।

२. कर्म के आधार पर प्रेम : दूसरे प्रकार का 'प्रेम' किसी कर्म के कारण होता है। कर्म ख़त्म होने पर प्रेम भी ख़त्म हो जाता है। इस प्रेम के दुनियावी स्तर पर कई उदाहरण दिए जा सकते हैं, जैसे किसी व्यक्ति से दिन भर काम लिया जाता हो, लेकिन यदि उसका कोई शारीरिक अंग नकारा हो जाए या शरीर रोगी हो जाये तो उसके प्रति दूसरों का स्नेह नहीं रहता। गुरबाणी में इस नुक्ते को इस तरह दरसाया गया है :

मनमुखा केरी दोसती माइआ का सनबंधु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९५९)

३. गुण के आधार पर प्रेम : तीसरे प्रकार का प्रेम गुण के कारण होता है। किसी व्यक्ति विशेष में से गुण की अनुपस्थिति होने के कारण, उसके साथ प्रेम भी ख़त्म हो जाता है।

४. जाति-प्रेम : चौथे प्रकार का प्रेम 'जाति-प्रीति' है, जो किसी प्रभाव, कर्म या गुण आदि के कारण नहीं होती। ऐसे प्रेम की निशानी एक ही है कि प्रेम करने वाले को इसकी वजह पता नहीं होती। उसके अंदर दुनियावी लाभ या हानि के प्रति कोई चिंता नहीं होती। उसके अंदर केवल मोहब्बत ही मोहब्बत होती है। प्रेम का यह प्रकार अन्य सभी किस्मों से बड़ा है। इसका सम्बन्ध जाति अर्थात् शख़्सियत के साथ होता है। ऐसा प्रेम मरणोपरांत भी ख़त्म नहीं होता। इस प्रकार का प्रेम केवल अकाल पुरख वाहिगुरु के साथ ही हो सकता है। जीव का प्रभु के साथ प्रेम होने के कारण, प्रभु का प्रभाव, कर्म, गुण आदि प्रेमी को प्रिय लगते हैं। परमात्मा के सुंदर सगुण स्वरूप पर प्रेमी मरता है, उसके कर्म पर कुर्बान जाता है।

प्रेम : मजाज़ी और हकीकी : प्रेम की उक्त किस्मों को दो भागों में बांटा जा सकता है— मजाज़ी तथा हकीकी। इनकी विस्तारपूर्वक चर्चा निम्नानुसार है :—

प्रेम : मजाज़ी : मजाज़ी प्रेम कृत्रिम (सांसारिक) होता है, जो दो दिलों में किसी स्वार्थ, कर्म या किसी अन्य कारण से होता है। कई बार मजाज़ी और हकीकी प्रेम को एक समझते हुए मजाज़ी प्रेम को हकीकी का पहला पायदान दरसाया जाता है, जबकि ऐसा करना उचित नहीं। मजाज़ी प्रेम, शारीरिक सुंदरता या गुणों को देखकर किया जाता है। मजाज़ी प्रेम बच्चे, स्त्री, प्रेमिका, मित्र, दौलत, पदार्थों आदि का प्रेम हो सकता है।

शारीरिक प्रेम, मानव को गुमराह कर देता है। पुरुष का स्त्री के प्रति प्यार, प्रेम नहीं। यह प्रेम की बहुत धुंधली-सी परछाईं है। माता-पिता का अपनी संतान के प्रति प्यार, 'प्रेम' के पवित्र मंदिर की चौखट-मात्र है। ऐसा प्रेम, प्रेम नहीं होता, यह ख़ुदगर्ज़ी होती है। इस तरह के प्रेम को 'मोह' का रूप कहा जा सकता है। यह प्रेम दुख का कारण भी बनता है। मीरदाद के कथनानुसार, जब तक कुल कायनात एक दूसरे की प्रेमी नहीं बन जाती, तब तक उन्हें 'प्रेम' का पवित्र शब्द मुँह से उच्चारण करने का कोई हक नहीं, क्योंकि ऐसा करना परमात्मा का अपमान है।[६]

वर्णनयोग्य है कि प्रेम को कई बार काम-चेष्टा के अधीन लाकर विचारा जाता है, परंतु ऐसा करना उचित नहीं। प्रेम कोई कामुक आकर्षण नहीं। कामवाशना में केवल शारीरिक आकर्षण होता है, जबकि प्रेम सतोगुणी व्यवहार है। काम, निजी शारीरिक सुख चाहता है, जबकि प्रेम पर-सुख चाहता है। काम का स्वाद पल भर (निमख काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि ॥ का होता है, जबकि प्रेम शाश्वत होता है। काम मानवीय शख्सियत को बिगाड़ता है, जबकि प्रेम विस्मयजनक बनाता है। कामी मनुष्य, काम की पूर्ति के लिए तड़पता है, जबकि प्रेमी को सच्चा प्रेम होने के कारण, उसे प्रियतम न भी प्राप्त हो, उसका प्रेम नहीं टूटता। प्रभु-प्रेम में प्रेमी प्रियतम की मिन्नत करता है। वह प्रभु के चरणों का त्याग नहीं करता, चाहे उसकी जान ही क्यों न चली जाये :

मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥
चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥ २ ॥
कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥
बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३४५)

प्रेम : हकीकी : प्रेम की दूसरी किस्म, प्रेम हकीकी है, जो प्राकृतिक (स्वाभाविक) है। यह प्रेम हकीकत, अर्थात् परम सत्यता के साथ होता है। प्रेम का सम्बन्ध व्यवहार के साथ है। बेशक विश्व-धर्मों ने प्रेम को अपने-अपने ढंग के साथ परिभाषित किया है, परंतु प्रेम का जो स्वरूप सिक्ख धर्म में मिलता है, वह निराला और अद्वितीय है। सिक्ख धर्म में प्रेम को 'स्व' से शुरू कर इसकी पहुंच समाज और परमात्मा तक करवाई गई है। सामाजिक स्तर पर मनुष्य आज़ादी, समानता और भाईचारक एकता का केंद्रीय-बिंदु प्रेम है। पारंपरिक सामाजिक बंधन तोड़ कर श्री गुरु नानक देव जी और उनके नौ ज्योति-स्वरूप गुरु साहिबान ने सदियों से लताड़े जा रहे गरीबों को प्रेम से गले लगा कर, उन्हें गौरव एवं स्वाभिमान के साथ जीना सिखाया। गुरु साहिबान की दृष्टि में कोई बेगाना नहीं :

सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६७१)*

वास्तव में गुरु साहिबान के मतानुसार कोई दूसरा है ही नहीं :

साहिबु मेरा एको है ॥

एको है भाई एको है ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३५०)

अकादमिक स्तर पर इस्तेमाल किए जाते शब्द 'Other' से तात्पर्य है— दूसरा, पराया। इसकी सिक्ख धर्म में कोई अहमियत नहीं है। प्रो. पूरन सिंघ के अनुसार, "सिक्ख धर्म में 'दूसरा भाव' देखना पाप है।" (To See Other is sin in Sikhism) अकाल पुरख परमात्मा के प्रेम में सिक्त प्रेमी की 'पर' की भावना समाप्त हो जाती है। इस अवस्था में दूसरों के लिए प्रेमी अपना आप कुर्बान कर देता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत ऐसे प्रेम की साक्षी है।

गहराई के साथ विचार करें तो पता चलता है कि 'पर' की भावना अहं के कारण है। परमात्मा तथा मानव में अहं का ही पर्दे (दीवार) है। गुरबाणी में अहं को तितली के बारीक पंखों जैसे पर्दे के द्वारा सांकेतिक किया गया है :

भांभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६२४)

परमात्मा तथा मनुष्य के दरमियान पड़े इस पर्दो (दीवार) की तरह मनुष्य तथा मनुष्य में भी अहं का पर्दा है। अहं अधिकांशत: लेना चाहता है, जबकि प्रेम देने का नाम है।

सिक्ख धर्म, प्रेम-मार्ग दृढ़ करवाता है। हठ-योग का सिक्ख धर्म में खंडन किया गया है। प्रेमा-भक्ति के द्वारा परमात्मा तक पहुँच करने के बारे में गुरबाणी में अनेक पर प्रवचन मिलते हैं। सिक्ख धर्म में प्रेम, संस्थाओं (संगत-पंगत, अमृत, खालसा आदि) के द्वारा प्रकट होता है। सिक्ख का गुरु के साथ प्रेम संगत में जाकर कथा-कीर्तन श्रवण करने से, पंगत में बैठ कर परशादा छकने से, एक बाटे में अमृत का चुला लेकर खालसा सजने से बन आता है। भक्त कबीर जी फरमान करते हैं कि जो व्यक्ति ईश्वरीय प्रेम और अनुराग ग्रहण कर लेते हैं, वे खालिस खालसे अर्थात् पवित्र हो जाते हैं :

कहु कबीर जन भए ख़ालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५५)*

हकीकी प्रेम का संचार : हकीकी प्रेम का संचार स्व से शुरू होकर परमात्मा तक चलता है, जिसकी संक्षिप्त विचार-चर्चा निम्नानुसार है :—

१. आत्म-प्रेम (स्व से प्रेम) : प्रेम-स्वरूप परमात्मा तक पहुँच करने के लिए सर्वप्रथम अपने आप के साथ प्रेम करना पड़ता है अर्थात् अपने शरीर के साथ प्रेम करने से ही प्रेम की आरंभता होती है। शरीर के कारण ही मानव का इस संसार पर आगमन हुआ है। इस शरीर को देवता भी तरसते हैं :

इस देही कउ सिमरहि देव ॥
सो देही भजु हरि की सेव ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११५९)

अत: इस शरीर को पालना (नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि ॥) प्रेम-मार्ग पर चलने के लिए पहला कदम है। कई बार शरीर को अनेक कष्ट देकर ईश्वर तक पहुँचने का यत्न किया जाता है, जो कि गुरमति ने मूलत: रद्द किया है।

परमात्मा से प्रेम करने वाले जिज्ञासु शरीर को ईश्वरीय देन समझते हुए, एक साधन की तरह इस्तेमाल करते हैं। वास्तव में स्व के साथ प्रेम करके ही दूसरों के साथ प्रेम करने की युक्ति आती है। मीरदाद के अनुसार, आत्म-प्रेम के बिना कोई प्रेम संभव नहीं। सब कुछ को अपने में समा लेने वाले 'स्व' से कोई 'स्व हकीकी' नहीं। परमेश्व इसी लिए शुद्ध प्रेम है, क्योंकि वो अपने आप से प्रेम करता है।[७] 'सामयिक स्व' से प्रेम करने के कारण मानव का प्रेम भी सामयिक होता है।

२. घर से प्रेम : घर से तात्पर्य वो स्थान है जहाँ मानव-प्रेम व मानव-इच्छाएं जन्म लेती हैं। घर वो स्थान है, जहाँ मानव ने बचपन में माँ की गोद की उष्णा, पिता की डाँट, भाई-बहन का प्रेम प्राप्त किया होता है। घर वो स्थान होता है, जहाँ मानव का आजीविका कमा कर वापिस (सायं को) लौट आने को दिल करता है। वास्तव में मानव की शख्सियत घर में ही घड़ी जाती है। घर के प्रेम के बिना जीवन अधूरा है।

असली धार्मिक जीवन की बुनियाद घर के रहन-सहन में ही रखी जाती है। घर का त्याग कर धर्म कमाने वाले व्यक्ति कभी 'धर्मी' नहीं बन सकते। इसी कारण गुरु साहिबान ने गृहस्थ को प्रधानता दी है। माता-पिता, पुत्र आदि सभी सम्बन्ध अकाल पुरख वाहिगुरु द्वारा बनाए हुए हैं :

माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए ॥
सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४९४)

३. गुरु से प्रेम : गुरु में एक आलौकिक आकर्षण होता है, जो जिज्ञासुओं को अपनी तरफ आकर्षित करता है। इस आकर्षण द्वारा प्रेमी अपने प्रियतम के प्रेम में भरपूर रहता है। गुरु से प्रेम कर सिक्ख उसका रूप ही बन जाता है। दिलचस्प तथ्य यह है कि परमात्मा को तो हमने देखा नहीं, जिस कारण उससे प्रेम करना कठिन लगता है, जबकि गुरु उसके प्रेम का प्रकट रूप है। सिक्ख के हृदय में जैसे-जैसे गुरु-प्रेम बढ़ने लगता है, वैसे-वैसे गुरु का ध्यान उसके हृदय में टिकने लगता है।

श्री गुरु अंगद देव जी के अनुसार यदि प्रेम-मार्ग में किसी प्रकार की रुकावट भी आती है तो उसे अपने सिद्धांत से पीछे नहीं हटना चाहिए। गुरु साहिब कहते हैं कि अगर बारिश होती हो और कंबल भीग जाये तो भी उस 'प्रेमी' से मिलना ज़रूरी है, नहीं तो 'प्रेम' टूट जाता है। यह प्रेमी की परिपक्वता का सूचक है। यह 'प्रेमी' के रिश्ते की ज़िम्मेदारी है। गुरु-फरमान है :

भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ॥
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७९)

४. परमात्मा से प्रेम : मानव का परम उद्देश्य अपनी आत्मा को सदास्थिर परमात्मा के साथ जोड़ कर अपना कल्याण करना है। इसकी पूर्ति प्रभु-प्रेम द्वारा ही संभव है। इसके लिए प्रेमी की प्रीति सच्ची होनी चाहिए। टूट जाने, रास्ते में रह जाने, अंत तक न निभ सकने वाली प्रीति कच्ची होती है। श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं

कि मुसाफ़िर के साथ स्नेह करने से कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता। वो चला जाता है और उसका प्रेम भी साथ ही चलायमान हो जाता है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की दृष्टि में पारिवारिक सदस्य— बहन, भाई, पत्नी, पुत्र, मित्र आदि सब निजी स्वार्थ के साथ जुड़े हुए हैं, जिस कारण इनकी प्रीति भी झूठी है :

जगत मै झूठी देखी प्रीति॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३६)

भक्त शेख फ़रीद जी के अनुसार सांसारिक प्रीति एक टूटे छप्पर की भाँति है। बारिश के समय यह सहायक नहीं होता। इसी तरह मतलबी लोग, बचाव का कोई विकल्प नहीं रहने देते। ज़रूरत पड़ने पर प्रेम पा लेते हैं, जरूरत पूरी होने पर प्रेम तोड़ देते हैं :

फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु॥
किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७८)

केवल ईश्वरीय प्रीति ही सच्ची है, जो अंत तक निभती है। परमात्मा के साथ सच्ची प्रीति पाने के लिए, उसकी भक्ति करनी ज़रूरी है और भक्ति के लिए प्रेम आवश्यक है :

मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६०)

सच्चा प्रेम वही होता है, जिसकी तह में कोई स्वार्थ नहीं होता। परमात्मा लोगों को नि:स्वार्थी होकर प्रेम करता है, इसलिए मानव का प्रेम भी नि:स्वार्थ होना चाहिए। प्रेम एक ईश्वरीय रहमत है। प्रेम ही परमेश्वर का विधान है। प्रेम की महत्ता इस कारण भी है कि परमात्मा ख़ुद प्रेम-स्वरूप है :

आपे प्रीति प्रेम परमेसुरु करमी मिलै वडाई॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३३०)

गुरु-प्रेम द्वारा सिक्ख अकाल पुरख, साधसंगत और मानव-मात्र के साथ प्रेम करना सीखता है। गुरु के साथ किया प्रेम वाहिगुरु तक पहुँच करवाता है। वाहिगुरु की प्रेमा-भक्ति आत्मिक शान्ति प्रदान करती है और साधसंगत का प्यार जिज्ञासु में शुभ गुण पैदा करता है। इसी तरह प्राणी-मात्र के साथ प्रेम करना, परमात्मा के साथ प्रेम करने के तुल्य है, क्योंकि प्रत्येक जीव वाहिगुरु का अंश है (कहु कबीर इहु राम की अंसु॥) ऐसा जिज्ञासु सृष्टिकर्ता और सृष्टि में फर्क नहीं समझता। उसे वाहिगुरु की ज्योति सभी तरफ दिखाई देती है :

सभ महि जोति जोति है सोइ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६६३)

श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रेम को 'मुंदावणी' में 'सबसु अधारो' दरसाया है। प्रेम हर मार्ग का सहारा है। प्रेम मनुष्य की ज़िंदगी का आधार है, सामाजिक ढांचे का केंद्र है, आत्मिक श्रेष्ठता प्राप्त करने की सीढ़ी है। प्रभु-प्रेम की अवस्था इतनी ऊँची है कि 'यारड़े दा सथर' भी ऐश-ओ-आराम की ज़िंदगी से अधिक आनन्दमयी प्रतीत होता है। ऐसी अवस्था में जिज्ञासु शारीरिक दुख, सुख, तृष्णा, मान-अपमान से ऊपर उठ जाता है।

प्रेम का यह मार्ग इतना आसान नहीं, जितना उक्त वर्णन से प्रतीत होता है। प्रेम-मार्ग पर चलने के लिए बड़ा हौसला चाहिए। इसके लिए सुख-आराम का त्याग करना पड़ता है, दुनियावी मोह-माया से ऊपर उठना पड़ता है। इस मार्ग पर चलते हुए कई बार सिर भी देना पड़ जाता है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार बिना जीवन की बाज़ी लगाए, प्रेम का खेल संपूर्ण नहीं हो सकता। प्रेमी सर्वप्रथम अपना आप कुर्बान करता है :

जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥
ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३)

प्रेम का दूसरा नाम आत्मसमर्पण है। इसे सीखने के लिए भारी मशक्कत की ज़रूरत होती है। अपना आप त्यागना ही प्रेम की आज़माइश होती है। प्रेम को प्राप्त कर प्रेमी के अंदर 'जीवन-कण' प्रवेश करता है, जिस कारण मृत्यु उसे भ्रम लगती है। इस अवस्था में प्रेमी अपना तन, मन, धन सब कुछ प्रेम के हवाले कर देता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'प्रेम' को केवल एक भाव तक ही सीमित नहीं रखा। उनके द्वारा दिखाया प्रेम संत-सिपाही की प्रेरणा है, जिससे शस्त्रधारी होकर ज़ुल्म का नाश किया जाता है। गुरबाणी की रौशनी में संत-सिपाही के लिए कुल ज़िंदगी एक सुंदर प्रेमिका है, जिसे वचनबद्धता के साथ ब्याहना है। इसके साथ ही गुरबाणी के अनुसार प्रेम दुनियावी विकारों-रसों में से गुज़र कर सुरजीत होने का नाम है। यह एक प्रकार की शहादत है। शहादत उच्चतम प्रेम-क्रीड़ा है। निस्संदेह बाहरी शहादत उत्तम होती है और आंतरिक शहादत (अहं का त्याग) प्रेम-मार्ग का शिखर होती है।

इस शहादत रूपी प्रेम-खेल का आरंभ सर्वप्रथम श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत से होता है। गुरु साहिब ने भयानक कष्ट सहन करते हुए गरम तवी पर बैठ कर, जो प्रेम की कथा सुनाई, उसकी गूँज सदैव काल के लिए सुनाई देती रहेगी। श्री गुरु तेग बहादर जी ने भी प्रभु-प्रेम को इस लोक में महसूस करते हुए अपनी शहादत दी। इसी तरह गुरु-चरणों के भंवरे, बाबा दीप सिंघ जी ने शीश हथेली पर रख कर लड़ते हुए, श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब में अपनी शहादत दी। 'चमकौर की गढ़ी' अब तक बड़े साहिबज़ादों की प्रेम भरी गाथा बयान कर रही है। प्रिय पिता का हुक्म बड़े साहिबज़ादों के लिए प्रेम का खेल खेलने का 'शुभ करमन' था, जिससे मुँह मोड़ना उन्होंने कदाचित नहीं सीखा था। इसके साथ ही छोटे साहिबज़ादों ने अपने भाइयों के नक्शे-कदमों पर चलते हुए सरहिंद की दीवार में खड़े होकर प्रेम के तराने गाए। इसी प्रकार पाँच प्यारों ने अपने शीश दिए, भाई मनी सिंघ जी ने शरीर का बंद-बंद कटवाया, भाई तारू सिंघ जी ने खोपड़ी उतरवाई, भाई सुबेग सिंघ और भाई शाहबाज सिंघ चरखड़ियों पर चढ़े। ऐसी अनगिनत उदाहरणें हैं, जब गुरसिक्खों ने गुरु-प्रेम के अधीन अपनी शहादत दी। इन प्रेम-गाथाओं के पीछे श्री गुरु

नानक देव जी के प्रेम-बोल गूँज रहे थे :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४१२)

उपरोक्त तर्ज़ पर 'चउबोले' बाणी में श्री गुरु अरजन देव जी सम्मन और मूसन को संबोधित होते हुए फरमान करते हैं कि हे सम्मन! यदि प्रेम की अदला-बदली धन से हो सकती तो क्या रावण कंगाल था जिसने अपना सिर काट कर शिव के आगे रखा था? प्रेम की रहमत धन से नहीं मिलती। यह एक लगन है। गुरु-फरमान है :

संमन जउ इस प्रेम की दम क्यिहु होती साट ॥
रावन हुते सु रंक नहि जिनि सिर दीने काटि ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६३)

वर्णनीय है कि सम्मन और मूसन, दुनियावी रिश्ते में पिता-पुत्र थे। मूसन ने श्री गुरु अरजन देव जी को परशादा छकाने के लिए प्रेम में आकर अपनी जान कुर्बान कर दी थी।

प्रेम हृदय में से प्रकट करने के तीन तरीके हैं— पहला, प्रभु-बख़्शिश, दूसरा, पूर्ण गुरु की कृपा और तीसरा, लगातार शबद की कमाई। परमात्मा और पूर्ण गुरु की कृपा द्वारा साधक के हृदय में प्रेम की मस्ती पैदा होती है। सुमिरन की बरकत से प्रेम-रूप वाहिगुरु की प्रत्यक्ष झलकार जिज्ञासु मानता है। सुमिरन के लगातार अभ्यास द्वारा अकाल पुरख वाहिगुरु के प्रति श्रद्धा और प्रेम बढ़ता जाता है। सुमिरन करते-करते जिज्ञासु प्रेम-उड़ान भरता हुआ वाहिगुरु के दर्शन की इच्छा करता है। उसके मन में वाहिगुरु के साथ मिलाप के सुनहरी पलों का इन्तज़ार तीव्र होता जाता है। मन ही मन वह अपने हृदय रूपी 'सेज' पर परमेश्वर के सज्जन की आशा लेकर वैराग्य में डुबकियाँ लगाता है। वाहिगुरु की कृपा द्वारा प्राप्त होने वाले प्रेम-रूप दर्शन की इच्छा साधक के अंदर परमात्मा की आवभगत की चिंता भी ज़ाहिर होती है। वास्तव में यह चिंता ही प्रेम है। पहले-पहल वर्षों के सुमिरन के निरंतर अभ्यास के बाद प्रभु-प्रेम का दिल के अंदर ख़ास एहसास पैदा होता है और इलाही रंग चढ़ता है। पूर्व जन्म की भक्ति के अनुसार प्रत्येक साधक जल्दी या देरी से प्रभु-प्रेम के झलकारे अपने अंदर महसूस करता है। वास्तव में नाम, प्रेम-पदार्थ है। अंतरात्मा नाम के साथ जुड़ने से, हृदय में से प्रेम फूट-फूट कर निकलता है। नाम के बिना प्रियतम की प्रीति नहीं उत्पन्न होती :

बिनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सुहेलीआ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २४२)*

एक बात स्पष्ट है कि गुरु साहिब की कृपा का पात्र बनने के लिए साधक को पूर्ण दृढ़ता के साथ, सभी बाधाओं को दूर करते हुए अपनी मंजिल की तरफ बढ़ना पड़ता है। ऐसे प्रेमी के मन में किसी दुनियावी माँग के बिना एक आकर्षण पैदा होता है, जो किसी तरीके से बयान करना संभव नहीं। इस प्रेममयी अवस्था को 'अक़्ल या बुद्धि' द्वारा बयान नहीं किया जा सकता।

प्रेमविहीन मनुष्य : श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि मनुष्य जितना मर्ज़ी सुंदर, ऊँची जाति वाला, चतुर, ज्ञानी, धनवान आदि क्यों न हो, परंतु यदि उसके दिल में परमात्मा के प्रति प्रीति नहीं, तो वह चलती-फिरती लाश ही है :

अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि ङिआनी धनवंत ॥
मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २५३)

भक्त शेख फ़रीद जी प्रीति खो जाने के डर से फरमान करते हैं कि मैं अपनी जवानी जाती देख कर नहीं डरता, यदि मेरी प्रीति न जाये। वे कहते हैं कि करोड़ों ही जवानियां प्रभु-प्रेम के बिना मुरझा सकती हैं :

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥
फरीदा कितीं जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७९)

सारांश

सारांश रूप से कहा जा सकता है कि प्रेम, व्यापार नहीं। प्रेम के मार्ग पर चलना कच्चे इंसान का काम नहीं। इस मार्ग पर चलने के लिए बड़े मज़बूत इरादे चाहिए होते हैं। यह काम वैरागियों का है, जो किसी भी हालात में मुँह नहीं मोड़ते। वे प्रियतम की प्राप्ति कर लेते हैं, जबकि कच्चे वैरागी रास्ते में ही झड़ जाते हैं :

रते सेई जि मुखु न मोड़ंन्हि जिन्ही सिञाता साई ॥
झड़ि झड़ि पवदे कचे बिरही जिन्हा कारि न आई ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२५)

आधुनिक समाज का प्रत्येक अंग, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक या फिर धार्मिक 'प्रेम' से विहीन होकर उच्च जीवन-मूल्यों से दूर जा रहा है। 'प्रेम' से भटक कर लोगों का जीवन गलत रास्ते पर चल पड़ा है। इस अस्थिरता के आलम में प्रेम ही एकमात्र ऐसा पदार्थ है, जो मानवता को शाश्वत सुख प्रदान कर सकता है। विश्व-शान्ति को मुख्य रखते हुए रूहानी प्रेम के प्रति चिंतन और अमल करने की ज़रूरत है।

संदर्भ-सूची :—

१. महान कोश, पृष्ठ ८०६.
२. भाई वीर सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब कोश, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २००३ (सातवीं बार), पृष्ठ ४२९.
३. जसवंत सिंघ नेकी, अनुभव प्रकाश, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, २०१९, पृष्ठ १०५.
४. मनी सिंघ (ज्ञानी), प्रेम पदार्थ, अरविन्द्र कौर कैनेडियन (प्रकाशक), श्री अमृतसर साहिब, १९७७, पृष्ठ ९.
५. गुरभगत सिंघ, विसमादी पूँजी : पंजाब और पंजाबी मौलिकता, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, २०१०, पृष्ठ २०.
६. मिखाइल नईमी, पोथी मीरदाद, (अनु.) डॉ. अमनदीप सिंघ, चेतना प्रकाशन, लुधियाना, २०१९, पृष्ठ ८७.
७. पोथी मीरदाद, पृष्ठ ८७.

बिना संतोख नही कोऊ राजै॥

–डॉ. मनजीत कौर*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है :

सहस खटे लख कउ उठि धावै॥
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै॥
अनिक भोग बिखिआ के करै॥
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै॥
बिना संतोख नही कोऊ राजै॥
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २७८)

अर्थात् मनुष्य की फितरत है कि वह हजारों पाकर लाखों के लिए दौड़ता है। धन के पीछे भागने से वह कभी तृप्त नहीं होता। विषयों के अनेक प्रकार के भोग करने पर भी वह संतुष्ट नहीं होता और व्यर्थ में खप-खप कर मर जाता है। (यह कुदरत का नियम है कि) बिना संतोष किए कभी कोई तृप्त, संतुष्ट नहीं हो सका है, क्योंकि स्वप्न में किए हुए कर्म की भांति उसके सारे कार-विहार व्यर्थ ही होते हैं।

स्पष्ट है कि जो व्यक्ति संतोषी वृत्ति का नहीं है वह लोभी है और लोभवश वह किसी भी हद तक जा सकता है। लोभी व्यक्ति को गुरबाणी में पागल कुत्ते की संज्ञा दी गई है :

लोभ लहरि सभु सुआनु हलकु है हलकिओ सभहि बिगारे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९८३)

लोभी एवं संतोषी वृत्ति की ज्ञानी संत सिंघ जी मसकीन ने बड़ी सुंदर व्याख्या की है। उनके चिन्तनानुसार, "कुछ विचारवानों का ख्याल है कि लोभ के बिना विकास असम्भव है, इसका होना अति लाज़मी है, जबकि विकास की तरफ तो सारा ब्रह्माड चल रहा है। एक छोटा-सा पौधा भी विकास की तरफ गतिशील है। वह भी फूल और फल तक पहुंचना चाहता है। पौधे में गति तो विकास की है, मगर गति में लोभ नहीं है। मनुष्य लोभ को मुख्य रख कर गतिशील होता है। फिर इस लोभशील गति से संसार को बहुत हानि पहुंचती है। मनुष्य के लोभ ने संसार का संतुलन बिगाड़ कर रख दिया है। एक की तिजोरी धन से भरी पड़ी है, एक का पेट भी खाली है।"

लोभी व्यक्ति पागल कुत्ते की तरह खतरनाक होता है। पंचम पातशाह ने इस संदर्भ में बड़ा

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९१२९७-६२५२३

सटीक समझाया है :

जिउ कूकरु हरकाइआ धावै दह दिस जाइ॥
लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ॥
काम क्रोध मदि बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाइ॥२॥
माइआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइ॥
त्रिसना पंखी फासिआ निकसु न पाए माइ॥
जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५०)*

अर्थात् जैसे पागल कुत्ता दसों दिशाओं में भागा फिरता है, वैसे ही लोभी जीव समझे-बूझे बिना भक्ष्य-अभक्ष्य (खाने योग्य अथवा न खाने योग्य) समस्त पदार्थ खाते ही चले जाते हैं। वे काम, क्रोध तथा अन्य वासनाओं से भरे रहते हैं और पुन:-पुन: योनियों (जन्म-मरण) में भटकते रहते हैं। माया ने अपना जाल फेंका हुआ है और उस जाल में विषय-विकारों का चुग्गा डाला हुआ है, जिसमें से जीव निकल ही नहीं पा रहा है। जिस ईश्वर ने सब कुछ दिया है, वो उसे न तो जानना चाहता है और न ही मानना, फलस्वरूप आवागमन में पड़ा रहता है।

ऐसे ही लालची प्रवृत्ति वाले जीवों के प्रति गुरबाणी में स्पष्ट हिदायत है कि जहाँ तक हो सके ऐसे लोभी व्यक्तियों पर विश्वास न करें, क्योंकि समय पड़ने पर ऐसे लोग प्राय: धोखा दे जाते हैं :

लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइ॥
अंति कालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४१७)

साधारण व्यक्ति की तो बात एक तरफ, संतोषी वृत्ति के अभाव में तो बड़े-बड़े राजाओं और धनवानों की तृष्णा की आग भी कम नहीं होती। श्री गुरु अरजन देव जी ने इस संदर्भ में बड़ा सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया है :

वडे वडे राजन अरु भूमन ता की त्रिसन न बूझी॥
लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी॥१॥
बिखिआ महि किन ही त्रिपति न पाई॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई॥ रहाउ॥
दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन ता की मिटै न भूखा॥
उदमु करै सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६७२)

अर्थात् बड़े-बड़े राजाओं और पूंजीपतियों की तृष्णा नहीं बुझ सकी। वे धन-संपदा के रंग में रंगे हुए उसी में लिप्त हैं और उनकी आँखों को अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता। विषय-विकारों में लिप्त कोई भी संतुष्टि नहीं पा सका, जैसे अग्नि ईंधन से संतुष्ट नहीं होती। आग में ईंधन डालने से अग्नि और भड़कती है ठीक उसी प्रकार इच्छाओं की पूर्ति के बाद भी तृष्णा और बढ़ती जाती है, कभी शांत नहीं होती। प्रभु के बिना संतोष नहीं प्राप्त

होता। जो हर दिन अति स्वादिष्ट भोजन करते हैं उनकी भी भूख नहीं मिटती। वे श्वान की तरह खाने की चिंता में ही चारों दिशाओं में भटकते रहते हैं।

श्वान दर-दर रोटी के टुकड़े की खातिर भटकता रहता है और जिस घर का दरवाजा खुला होता है, उसमें घुसकर और नहीं तो वहां रखी चक्की को ही चाटने लगता है। वो चक्की में से आटा चाट कर भी तृप्त नहीं होता और चक्की की मूठ को ही मुंह में ले दौड़ता है। यही नहीं, उसने छीके पर भी अपनी नज़र गाड़ रखी होती है। श्वान के रूपक के माध्यम से निम्नलिखित भक्त कबीर जी जीव की लोभी प्रवृत्ति का वर्णन करते हैं कि प्रलोभनवश जीव की संतुष्टि नहीं होती और उसका अंत बुरा ही होता है :

सुरह की जैसी तेरी चाल॥
तेरी पूंछट ऊपरि झमक बाल॥१॥
इस घर महि है सु तू ढूंढि खाहि॥
अउर किस ही के तू मति ही जाहि॥१॥रहाउ॥
चाकी चाटहि चूनु खाहि॥
चाकी का चीथरा कहां लै जाहि॥२॥
छीके पर तेरी बहुतु डीठि॥
मतु लकरी सोटा तेरी परै पीठि॥३॥
कहि कबीर भोग भले कीन॥
मति कोऊ मारै ईंट ढेम॥४॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९६)

वास्तव में माया का व्यवहार ही ऐसा है कि यह बिना यत्न किए संग्रह नहीं हो सकती और विडंबना देखो कि मरने पर मनुष्य के साथ एक पाई भी नहीं जाती। गुरबाणी में श्री गुरु नानक पातशाह ने समझाया है :

इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई॥
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४१७)

धन-दौलत के पीछे संसार के अनेक लोग ख्वार होते हैं और इसके पीछे लगकर अनंत लोग बर्बाद हुए हैं।

नश्वर पदार्थों के जाल में फंस कर जीव सुखों के निधान प्रभु को ही भूल जाता है। इस बावले मन को हाथी, बंदर, तोते, कसुंभ रंग का उदाहरण देकर भक्त कबीर जी बड़ा सुंदर समझाते हैं। बंदर का उदाहरण देखिए, संकरे द्वार वाले बर्तन में रखे अनाज को बंदर हाथ आगे बढ़ा कर मुट्ठी में भर लेता है। न उसकी बंद मुट्ठी बाहर निकलती है और न ही वह अनाज का मुट्ठी में से त्याग करता है। परिणामस्वरूप (मदारी द्वारा) पकड़ा जाता है और फिर मुक्त होने की चिंता करता है। फिर मदारी के इशारे पर घर-घर जाकर नाचता है। पूरा शबद पढ़कर ही पूरी बात समझ में आती है :

कालबूत की हसतनी मन बउरा रे चलतु रचिओ

जगदीस॥. . .
मरकट मुसटी अनाज की मन बउरा रे लीनी हाथु पसारि॥
छूटन को सहसा परिआ मन बउरा रे नाचिओ घर घर बारि॥. . .

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३५)

गुरबाणी में सूतक-पातक, छुआ-छूत की तनिक भी मान्यता नहीं है। हमारे अंदर बस रही विकारों की मलिनता को दूर करने का सुंदर उपदेश है और इस तथ्य को गहराई से समझाया गया है कि असल में सूतक है क्या :

मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु॥
अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु॥
कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि॥
नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७२)

श्री गुरु नानक पातशाह ने कितना सुंदर समझाया है कि लोभ मन का सूतक (अपवित्रता) है और झूठ जीभ की । आँखों की अपवित्रता परायी स्त्री पर कुदृष्टि डालना है, पराये रूप और धन पर बुरी नजर रखना है। कानों की अपवित्रता निंदा सुनना है। गुरु जी का पावन संदेश है कि ऐसे व्यक्ति ही वास्तव में बंधनों में बंधे हुए यमपुरी जाते हैं।

लोभ का वास्तविक कारण मानव-मन की अनंत इचछांए ही तो हैं। जीवन खत्म हो जाता है, लेकिन इच्छाएं खत्म होने का नाम ही नहीं लेतीं। इस संदर्भ में लोक-प्रचलित गीत है :

आसां कदे बंदे दीआं हुन्दीआं न पूरियां!
कलपदा बथेरा फिर वी रहिंदियां अधूरियां!
आखदे सिआणे माया माया नूं है जोड़दी।
लक्खां वालियां नूं आसा रहिंदी है करोड़ दी।
करोड़ हो जाण फिर वी पैन्दियां न पूरिआं!
आसां कदे बंदे दीआं हुन्दीआं न पूरियां!

अत: स्पष्ट है कि आशाओं-इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। फिर जहन में सवाल उठता है कि इनसे मुक्ति कैसे सम्भव है? गुरबाणी ही हमारा मार्गदर्शन करती है कि ईश्वर के नाम से जुड़ने के अतिरिक्त तृष्णा आदि से निजात पाने की कोई युक्ति नहीं है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है :

त्रिसना बुझै हरि कै नामि॥
महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८२)*

इस संदर्भ में डॉ. भाई वीर सिंघ का एक बहुत सुंदर दृष्टांत यहाँ उल्लेखनीय है। वे लिखते हैं कि एक बार उन्होंने धरती पर बहुत सारे दाने बिखरे देखे और चिड़िया दाने चुग रही है। प्रत्येक दाना चुगने से पहले चिड़िया सिर झुकाती है। फिर थोड़े-से दाने चुग कर लंबी उड़ान भरती है, मानों चिड़िया उड़ते-उड़ते कह रही हो, हे प्रभु! तेरा शुक्र

है! तेरा शुक्र है! तूने आज दिया है, तू कल भी देगा, तू हमेशा ही देगा। वह छोटी-सी चिड़िया कितनी कृतज्ञ है उस ईश्वर के प्रति, जो दाना चुगने से पहले सिर झुकाती है, मानों ईश्वर से कह रही हो :

तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५२)

और साथ ही पूर्ण विश्वास मालिक पर है, जिसने आज दिया है, वह हमेशा के लिए देगा। वाह रे इंसान! तू कितना मूढ़ स्वार्थी और कृतघ्न है! तुझे तो ईश्वर पर तनिक भी विश्वास नहीं! तू तो हर पल लोभवश संग्रह की ही सोचता रहता है! तुझे तो आज की भी चिंता, कल की भी चिंता और आने वाले महीनों-वर्षों की भी चिंता लगी रहती है। यहीं पर बस नहीं, तुझे तो आने वाली पुश्तों की भी चिन्ता सताती रहती है।

इंसानी फितरत है, जब वह ईश्वर से कुछ मांगता है तो न मिलने की सूरत में पिछली मिली समस्त वस्तुएं भी भूल जाता है और ईश्वर से हमेशा शिकायतें ही करता है। इस संदर्भ में पंचम पातशाह का बड़ा प्यारा संदेश है 'सुखमनी साहिब' पावन बाणी में :

दस बसतू ले पाछै पावै ॥
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २६८)

अगर ईश्वर जीव को पूर्व काल में दी हुई (दस) वस्तुएं भी वापिस ले ले और जो अब मांगी है वह भी न दे तो मूर्ख प्राणी, तू क्या कर लेगा अर्थात् ईश्वर का क्या बिगाड़ लेगा? गुरु जी ने यही समझाया है कि जिस परमेश्वर के आगे तेरी कोई पेश नहीं जाती, उसके चरण-कमलों में बारम्बार नमस्कार कर!

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी अमृत तुल्य है। वह हमें सदैव सुख, चैन और सकून भरा जीवन-यापन करने व समूची मानवता हेतु अमन का माहौल सृजित करने की प्रेरणा देती है, अत: तृष्णालु प्रवृत्ति त्याग कर संतोषी प्रवृत्ति अपनाने की नितांत आवश्यकता है। शेख साअदी ने भी इस संदर्भ में बहुत सटीक उदाहरण पेश किया है :

गुप्त चशमे तंग दुनियादार दा,
या कनायत पुर कुनद खाके-गोर।

अर्थात् दुनिया भर की तंग आँखें दो चीजों से ही भर सकती हैं— एक संतोष से और दूसरी कब्र की मिट्टी से। अब विचार हमने करना है कि जीते-जी सब्र-संतोष वाला जीवन व्यतीत करना है अथवा मरने का इन्तजार करना है।

संतोष रूपी धन पाकर जिसे ईश्वर का हर हाल में शुक्राना करना आ गया, उसने ही मानों सब कुछ पा लिया, अन्यथा इन इच्छाओं का दायरा जितना विशाल होगा, उतनी ही तंगहाली का एहसास होगा, उतनी ही शिकायतें होंगी और

उतना ही बंदा दुखों की गिरफ्त में होगा। इसके विपरीत, जितना सब्र और संतोष एवं इच्छाओं का दायरा सीमित तथा शुक्राने से भरा हृदय होगा उतना ही बंदा सुखी और सकून भरा जीवन जीकर अपना लोक-परलोक सफल बना लेता है और सदैव ईश्वरीय कृपा का पात्र बना रहता है। मेरे ख्याल में उसका मनोभाव ऐसा हो जाता है :

जो मिला है उसका गुमान नहीं!
जो नहीं मिला उसका अरमान नहीं!
इच्छाओं का कोई पारावार नहीं!
संतोष के बिना बेड़ा पार नहीं!

यह संतोष रूपी अनमोल खजाना मिलता है सच्चे आचरण से और सच्चा आचरण बनता है सच्चे गुरु से। श्री गुरु नानक पातशाह जी का निर्मल संदेश है :

सच बिनु सतु संतोखु न पावै ॥
बिनु गुर मुकति न आवै जावै ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०४०)

अपने इस आलेख के अंत में बाबा शेख फरीद जी का पावन संदेश दर्ज करना चाहूंगी, जिसमें उन्होंने सब्र और संतोष को अचूक निशाना बताया है :

सबरु एहु सुआउ जे तूं बंदा दिड़ु करहि ॥
वधि थीवहि दरीआउ टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८४)

अर्थात् संतोष ही जीवन का श्रेष्ट उद्देश्य है। हे व्यक्ति! यदि तू इसे मन में दृढ़ करता रहे तो तू फलता-फूलता हुआ दरिया की तरह हो जाएगा तथा कमजोर होकर कभी छोटा नाला नहीं बनेगा।

यही नहीं, बाबा शेख फरीद जी तो यहां तक समझाते हैं :

सबर मंझ कमाण ए सबरु का नीहणो ॥
सबर संदा बाणु खालकु खता न करी ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८४)

अर्थात् (हे बंदे!) संतोष को अपने हृदय में कमान बना और इसकी डोरी भी संतोष की हो। इसका बाणा भी संतोष का ही हो और उसे ऐसे चला कि तीर जाकर निशाने पर लगे अर्थात् निशाना (खुदा) हासिल हो जाए।

इस कलियुगी प्रसार में उस परवरदिगार के चरणों में अरदास करें कि वाहिगुरु तरस करके हमें भी सब्र और संतोष वाला जीवन प्रदान करे, ताकि शेष सांसें सार्थक हो जाएं और हमारा बेशकीमती जीवन-मनोरथ सफल हो सके।

ख़बरनामा

नवंबर १९८४ सिक्ख कत्लेआम के दोषी सज्जन कुमार को बरी करना पीड़ितों के साथ बेइन्साफ़ी : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २२ जनवरी : दिल्ली में सन् १९८४ में हुए सिक्ख कत्लेआम के दोषी कांग्रेसी नेता सज्जन कुमार को जनकपुरी और विकासपुरी से सम्बन्धित कत्लेआम के मामलों में अदालत द्वारा बरी किये जाना करीब ४१ वर्ष से इंसाफ़ की आशा लगाए बैठे पीड़ित परिवारों के साथ घोर बेइन्साफ़ी है। यह वक्तव्य शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने मुख्यालय से जारी बयान में दिया। एडवोकेट धामी ने कहा कि अदालत के इस फ़ैसले ने उन पीड़ित परिवारों को मानसिक तौर पर गहरी चोट पहुंचाई है, जो लंबे समय से इंसाफ़ की लड़ाई लड़ रहे हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि नवंबर १९८४ ई. का सिक्ख कत्लेआम इतिहास में क्रूर कृत्य के रूप में दर्ज है, जब सरकारी शह पर सिक्खों को वहशियाना ढंग से निशाना बनाया गया। उन्होंने कहा कि सिक्ख संस्थाएं तथा पीड़ित परिवार लगभग ४१ वर्ष से इंसाफ़ की लड़ाई लड़ रहे हैं। इतनी लम्बी लड़ाई लड़ने के बाद अदालत का यह फ़ैसला पीड़ितों के साथ-साथ समूची कौम को पीड़ा प्रदान करने वाला है। उन्होंने कहा कि कांग्रेसी नेता सज्जन कुमार स्पष्ट रूप से दिल्ली सिक्ख कत्लेआम का दोषी है और वह पहले भी एक केस में सज़ा काट रहा है। एडवोकेट धामी ने कहा कि सिक्ख कत्लेआम के दोषी सज्जन कुमार का इन मामलों में सज़ा से बच जाना दुखदायक व निराशाजनक है।

सिक्ख परीक्षार्थियों के कड़े उतरवाना सिक्ख विरोधी मानसिकता का प्रदर्शन : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : ९ फरवरी : केंद्रीय अध्यापक योग्यता परीक्षा में सिक्ख परीक्षार्थियों के कड़े उतरवाने का कड़ा नोटिस लेते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने इसकी जाँच करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि यह सिक्ख विरोधी मानसिकता का प्रदर्शन है, जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। बीते दिनों अध्यापक योग्यता परीक्षा के लिए बठिंडा के गाँव भोखड़ा में स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल में बने परीक्षा केंद्र में सिक्ख परीक्षार्थियों के कड़े उतरवाने का मामला सामने आया था। एडवोकेट धामी ने कहा कि पंजाब सिक्ख बहुसंख्या वाला क्षेत्र है, जहाँ प्रत्येक को यह पता है कि कड़ा सिक्खों का अटूट अंग है। इसके बावजूद भी सिक्ख परीक्षार्थियों के कड़े उतरवाने

की हरकत दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि गुरु साहिबान की धरती पंजाब पर ऐसी हरकतें किसके इशारे पर हो रही हैं, यह जांच का विषय है। क्या पंजाब सरकार इसे स्वीकृति दे रही है? यदि ऐसा है, तो इससे दुखदायक और क्या हो सकता है!

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने कहा कि इस संजीदा मामले की गंभीरता के साथ जांच कर श्री अकाल तख़्त साहिब को योग्य कार्रवाई करने के लिए लिखा जायेगा। फ़िलहाल इसकी जाँच करवाई जा रही है। जांच-पड़ताल की इस कार्रवाई के लिए गुरुद्वारा श्री हाजीरतन साहिब बठिंडा के मैनेजर स. दरशन सिंघ, सब-आफिस तलवंडी साबो के इंचार्ज स. भोला सिंघ तथा प्रचारक सिंघों की ड्यूटी लगाई गई है। इस कमेटी की जांच-रिपोर्ट के अनुसार उचित कार्रवाई की जाएगी।

एडवोकेट धामी ने पंजाब निवासियों से भी अपील की कि ऐसी हरकतों का मौके पर ही विरोध दर्ज करवाया जाये। प्रत्येक सिक्ख विरोधी कार्यवाही को चुनौती दी जाये और मौके पर मौजूद सिक्ख प्रसंग में अपनी बात रख कर कौमी तरजुमानी करना प्रत्येक सिक्ख का फ़र्ज़ है। यदि ऐसी हरकतों को मूक सहमति मिलती रही तो

दिल्ली सरकार द्वारा प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) की रिहाई पटीशन को रद्द करने पर एडवोकेट धामी ने एतराज़ प्रकट किया

श्री अमृतसर साहिब : १० फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने दिल्ली सरकार द्वारा प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) की रिहाई पटीशन को पुन: रद्द करने के फ़ैसले की कड़ी निंदा करते हुए इसे सिक्खों के साथ बेइन्साफ़ी करार दिया है। एडवोकेट धामी ने कहा कि पहले आम आदमी पार्टी की सरकार के समय कई बार प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) की रिहाई पटीशन 'सज़ा समीक्षा बोर्ड' द्वारा रद्द की गई थी और अब भाजपा की सरकार भी उसी रास्ते पर चलते हुए सिक्ख भावनाओं के विरुद्ध फ़ैसले कर रही है। उन्होंने कहा कि 'सज़ा समीक्षा बोर्ड' द्वारा कई कैदियों की सज़ा माफ करने की सिफ़ारिश की गई है, जबकि ३३ वर्ष से सज़ा काट रहे प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) के मामले को रद्द कर दिया गया है। यह मानवाधिकारों का उल्लंघन है, जिससे सिक्ख जगत में निराशा पैदा हो रही है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि भाजपा एक तरफ़ सिक्ख-हितैशी होने का दावा करती है, जबकि सिक्खों से सम्बन्धित मामलों में सरकार की पहुँच उसके दोहरे चेहरे को बयान करती है। उन्होंने कहा कि सिक्खों ने देश के लिए हमेशा कुर्बानियां की हैं, परंतु सिक्खों के प्रति सरकारों की नकारात्मक पहुँच ने हमेशा निराशा ही दी है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने सरकार से अपील की

कि अपनी सज़ा से ज्यादा समय जेल में बिता चुके प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) के फ़ैसले में इंसाफ़ किया जाये और उनकी तुरंत रिहाई करने के आदेश जारी किए जाएँ।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिकलीगर सिक्ख बच्चों की फ़ीस के लिए दिए ४३ लाख रुपए

श्री अमृतसर साहिब : १३ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से आंध्रा प्रदेश के विशाखापट्टनम तथा विजेवाड़ा में सिकलीगर सिक्ख बच्चों की स्कूल- कॉलेज़ की फ़ीस के लिए ४३ लाख ३ हज़ार रुपए की राशि जारी की गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के निर्देशानुसार यह सहायता राशि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्डु, धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां ने आंध्रा प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर शिक्षा प्राप्त कर रहे सिकलीगर बच्चों की फ़ीस के रूप में स्कूलों-कॉलेजों को सौंपी। वर्णनीय है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सिकलीगर सिक्ख बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रत्येक वर्ष बच्चों की फ़ीस अदा करने का फ़ैसला किया गया है। इसी के अंतर्गत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा शैक्षणिक सत्र २०२४-२५ व २०२५-२६ की फ़ीस भेजी गई है।

इस सम्बंध में बात करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता ने कहा कि विभिन्न राज्यों में निवास कर रहे सिकलीगर सिक्ख समाज का अहम अंग हैं, जिनके बच्चों की पढ़ाई के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी निरंतर यत्नशील है। उन्होंने कहा कि उनकी फ़ीस देने का उद्देश्य सिकलीगर सिक्ख बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षित करना है, ताकि भविष्य में वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। उन्होंने कहा कि हमारे लिए ख़ुशी की बात है कि बहुत-से बच्चे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सहयोग से पढ़ कर रोजगार प्राप्त कर रहे हैं, जो अपने परिवार का सहारा बनेंगे।

धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां ने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के निर्देशानुसार आंध्रा प्रदेश के विभिन्न स्कूलों-कॉलेजों में पढ़ रहे सिकलीगर तथा बनजारा सिक्ख बच्चों की फ़ीस उनके स्कूल-कॉलेजों को सौंपी गई है। उन्होंने बताया कि बीते समय में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा लिए गए फ़ैसले के अनुसार साल भर की फ़ीस एक ही समय पर ख़ुद जाकर जमा करवाई जाती है। इस अवसर पर उनके साथ स. दिलशाह सिंघ आनंद, सुपरवाइज़र स. हरमिंदरबीर सिंघ तथा गुरुद्वारा इंस्पेक्टर स. चंचलदीप सिंघ शामिल थे।

अकाली फूला सिंघ जी

Registered with PRGI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2026-28 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB//R-001/2026-28

GURMAT GYAN March 2026

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

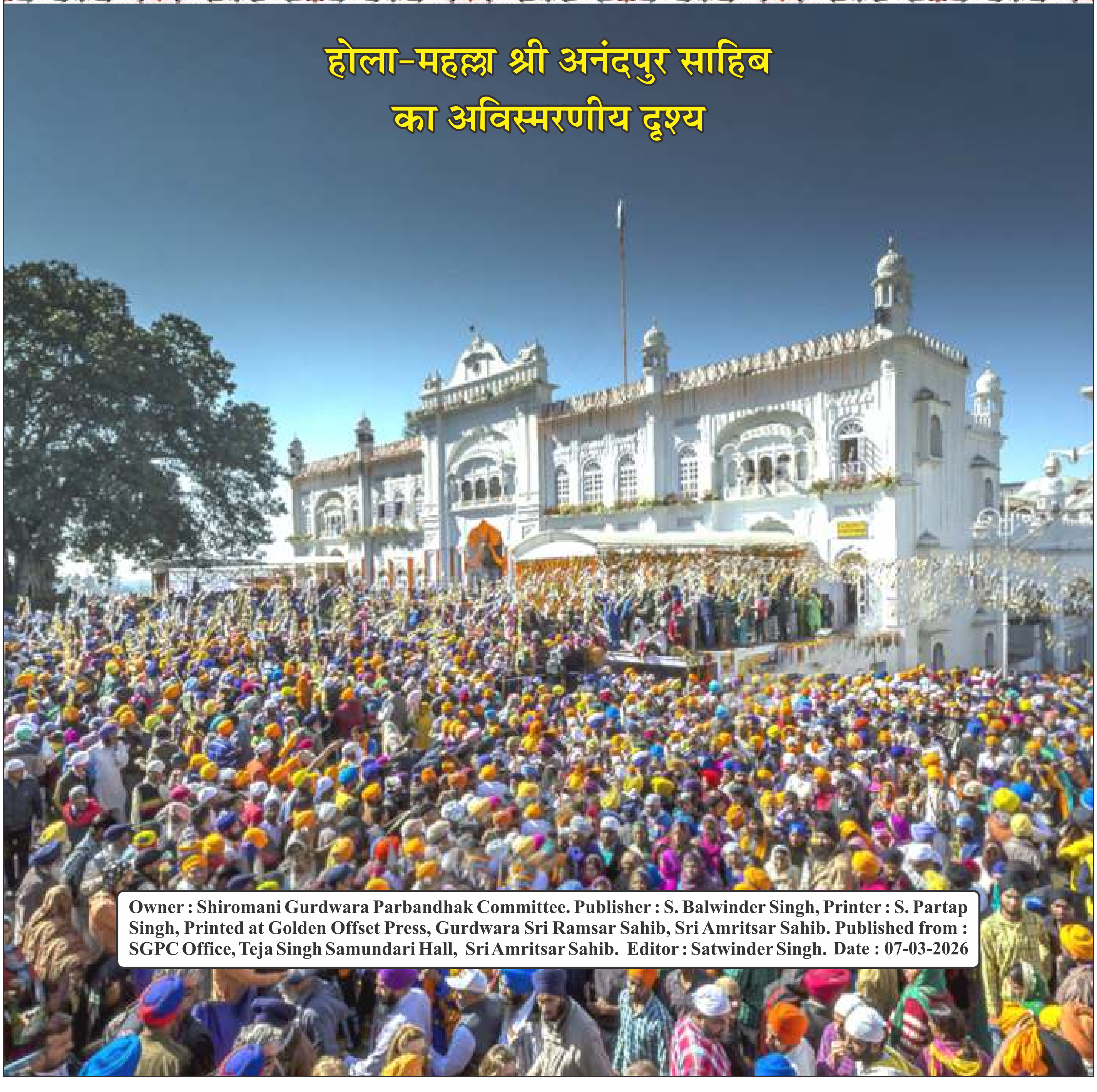

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher : S. Balwinder Singh, Printer : S. Partap Singh, Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from : SGPC Office, Teja Singh Samundari Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh. Date : 07-03-2026